परोपकारी

Year-78

रवि शंकर—झांसी : दीवाने और पागल में क्या अन्तर है ?

उ० : बहुत बड़ा अन्तर है । दीवाना तो उसे कहते हैं, जो बहुत होशियार हो । और पागल वह है जो होश का यार न हो । एक बार एक पागल ने सोचा कि उसने बैलगाड़ी से, तांगे से, रिक्शा से, साईकिल से, घोड़े से, ऊंट से, मोटर से, कार से, रेल से और यहां तक की पानी के जहाज से और हवाई जहाज से सफर किया है, पर डाक से कभी सफर नहीं किया । यह सोचकर वह एक दिन नोटों से अपनी जेब भरकर डाकखाने पहुंचा । तराजू पर अपना वजन करके डाकखाने के बाबू से टिकटों का हिसाब पूछ और अपनी छाती पर टिकट चिपका कर लैटर बक्स के पास बैठ गया, डाक से सफर करने के लिए । डाकिया आया तो उसने देखा कि एक आदमी छाती पर टिकट चिपकाए लैटर बक्स का ताला पकड़े बैठा है और कह रहा है मैं भी डाक से सफर करूंगा । डाकिए के बहुत समझाने पर भी जब उसने लैटर बक्स का ताला न छोड़ा तो डाकिये ने अपना जूता उतारा और दो-चार करारे-करारे जूते उसकी कमर पर रसीद कर दिए । इस पर उस पागल ने कहा, 'भाई, मैंने टिकटें अपनी छाती पर लगायी हैं, तुम मुहरें कमर पर क्यों लगा रहे हो ?

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

श्रवण कुमार—बिदासर : चाचा जी, हमारे समाज में कैसे-कैसे अंध विश्वास फैले हुए हैं ?

उ० : इसे कहते हैं पागलपन का प्रश्न । इसका दीवानगी से भरपूर उत्तर है : 'हमारे अंध विश्वास में कैसे-कैसे लोग फैले हुए हैं ।'

प्रदीप कुमार—भोपाल : देखने में छुट्टन बहुत छोटा है फिर भी कितना मोटा है ! क्या आप मुझे छुट्टन का वजन बता सकते हैं ?

उ० : जब भी वजन करने लगते हैं, तराजू टूट जाती है । इतना जान लीजिए कि पिछले दिनों एक बार वह हाथी की सवारी कर रहे थे तो उनके पीछे तालियां बजाने वाले बच्चों की भीड़ लग गयी थी । इस पर छुट्टन ने उससे पूछा था, 'क्यों शोर मचा रहे हो ? क्या कभी आदमी को हाथी पर बैठा नहीं देखा ?' इस पर बच्चों ने और जोर से तालियां बजा कर कहा, 'हाथी पर बैठा आदमी तो देखा है पर हाथी पर बैठा हाथी कभी नहीं देखा ।'

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अख्तर जावेद—वाराणसी : एक लम्बी जासूसी कहानी भेजना चाहता हूं, क्या आप दीवाना में प्रकाशित करेंगे ?

उ० : हमारी दीवानगी पर पूरी उतरी तो अवश्य प्रकाशित करेंगे ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

रुखसाना सुल्तान—नागपुर : हमारा दिल्ली को ट्रांसफर हो गया है । वहां के बारे में कुछ बतायें । सुना है वहां ईमानदार घरेलू नौकर बड़ी मुश्किल से मिलता है ?

उ० : हमारे नौकर से अनुमान लगा लीजिए । दो दिन पहले ही जब हम उस पर बिगड़ रहे थे तो उसने कहा, 'साहब, मुझे वह शब्द नहीं मिल रहे हैं जिनसे मैं अपनी ईमानदारी के लिए आपकी तसल्ली कर सकूं । इस पर हमने कहा, 'तुम्हें शब्द नहीं मिल रहे हैं, और मुझे अपनी दो कमीजें, एक कोट और चार मेजपोश नहीं मिल रहे हैं ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

महमद सलीम—अलीगढ़ : क्या आप चाची जी को अपने साथ पार्टियों में ले जाते हैं ?

उ० : भला कोई खुशी से जहर पीता है दुनिया में ? मजबूरी की हालत में ले जाना ही पड़ता है । पिछले दिनों फिल्मी सितारों की एक पार्टी में हम उन्हें साथ ले जाने लगे तो हमारे लाख समझाने पर भी कि बहुत सादगी बर्तना, इन्होंने बहुत भारी मेकअप किया कि शबाना आजमी और जीनत अमान भी क्या करेंगी । जब पार्टी गर्म हुई तो हमने देखा कि सभी मेहमान हमारी श्रीमति जी के गले में लटके नेकलेस की ओर घूर रहे हैं । उस जड़ाऊ नेकलेस में हीरों से जड़ा एक हवाई जहाज लटक रहा था । [illegible] लगाइये, हमारी श्रीमति जी की [illegible] साईज गर्दन और उसमें लटकता हु[illegible] जहाज के पेंडल वाला नेकलेस । [illegible] कुमार को अपनी गर्दन की ओर घू[illegible] कर हमारी श्रीमति जी ने पूछा, '[illegible] हवाई जहाज के कारण तुम पर भ[illegible] मुसीबत आई है ?' इस पर संजीव कु[illegible] कहा, 'न मुझ पर कोई मुसीबत आई [illegible] न जहाज पर । मैं सोच रहा हूं, [illegible] हवाई अड्डे पर आई है ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

केवल अरोड़ा—काशीपुर : आप क[illegible] जनता पार्टी की तारीफ क्यों नहीं क[illegible]

उ० : जनता पार्टी को बनाने वालों [illegible] तारीफ करते हैं :

तारीफ उस खुदा की, जिसने इन्हें ब[illegible]
क्या यह बनायेंगे कुछ इनको नहीं ब[illegible]

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

रामलाल वर्मा—अम्बाला कैंट : मैं [illegible] जीनत अमान से मिलना चाहता हूं [illegible] इस इच्छा के बारे में आपका क्या [illegible] है ?

उ० : यह बूर के लड्डू हैं । जिसने ख[illegible] पछताया, जिसने न खाये वह पछता[illegible]

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

विनोदपुरी 'रंजू'—लुधियाना : दूस[illegible] दोष अपने सर पर कब आ जाता है [illegible]

उ० : सर का तो पता नहीं । हमें तो [illegible] का दोष आंख पर आने का तजुर्बा है [illegible]

नींद रातों की सकूं दिन का हमें खोन[illegible]
भूल जो की, दिल ने की और आंख क[illegible]

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अनिल त्यागी—अलाउद्दीनपुर : एक [illegible] सुनिये :

मैं हूं, दिल है और ये तनहाई है
तुम भी जो होते तो अच्छा होता [illegible]

उ० : पर ऐसा भी होता है, कोई पा[illegible] हो तो और फिर भी तनहाई हो । एक [illegible] शेर है :

अल्लाह रे बेखुदी के तेरे पास बैठक[illegible]
तेरा ही इंतेजार किया है कभी-कभी [illegible]

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फिक्र तौंसवीं

ग्रौर फिर मरने के एक सप्ताह बाद मेरी ग्रांख खुल गई। मगर वह हुग्रा मेरा तो बाकायदा देहान्त हो गया ग्रगर देहान्त नहीं हुग्रा था तो मेरी से बन गई ? हो सकता है कि कब्र ग्रौर के लिए खोदी गई हो ग्रौर मौका दफन मुझे कर दिया गया हो। मगर समाज ग्रभी इतना भ्रष्ट नहीं हुग्रा कि की कब्र पर कब्जा करने के लिए खुद न कर लेट जाए।

तो क्या यह डाक्टर की गलती थी ? डाक्टर तो बड़ा क्वालिफाईड था। मैं च्छी तरह जानता था। उसने जितने को कब्रिस्तान पहुंचाया था उनमें से जिन्दा होकर नहीं लौटा था। मैं रेशान हुग्रा। किस से पुष्टि करायी कि मैं मर चुका हूं या नहीं ? ग्रतः मैंने लेटे-लेटे ग्रावाज दी—'कोई है ?'

उत्तर में जैसे गुम्बद की सी ग्रावाज 'कोई है ?'

मैंने पूछा, 'तुम कौन हो ? डाक्टर सह हो ?'

उत्तर ग्राया, 'नहीं, मैं फिक्र तौंसवी हूं।' थैंक गॉड ! मैंने सोचा, ग्रपनी ही हचान का ग्रादमी मिल गया। यह थ ब्लैकमेल नहीं करेगा। ग्रतः मैंने 'तुम कहां हो किबला ?'

मैं तुम्हारे ग्रन्दर हूं।'

ग्रन्दर हो ? मगर तुम तो बाहर निकल ! स्वर्ग सिधार गए थे ! लौट क्यों '

उत्तर में कुछ सिसकियां सी सुनाई दीं, ई दुःखी हो, बेहद पछता रहा हो। ई बच्चा घर से लड़-झगड़ कर निकल ौर दिन भर भूखा प्यासा रहने के र लौट ग्राए ग्रौर दीवार से लग कर यां भरने लगे।

ने पूछा—'रो क्यों रहे हो फिक्र तौंसवी ? रहा हूं, देहान्त के बाद लौट क्यों

ह बोला, 'दरग्रसल गलती सी हो गई ी देहान्त मेरा नहीं हुग्रा था, तुम्हारा । मैं तो तुम्हारी ग्रात्मा थी। तुम्हारे शरीर से मुक्ति पाकर बड़ी खुशी हुई थी कि चलो इस बेहूदा इन्सान से पिंड छूटा, ग्रब किसी ग्रच्छे जिस्म में जाकर कुछ दिन ऐश करूंगी। ग्रतः सप्ताह भर तक विभिन्न शरीरों के दरवाजे खटखटाती फिरी। एक बादशाह के घर गई, एक रईस के घर, एक नवाब के यहां, एक स्मगलर के दरे दौलत पर—यहां तक कि एक मठ के महन्त के यहां भी गई, मगर किसी ने भी दरवाजा नहीं खोला, सबने उत्तर दिया, 'गो बैक !' हम यह बला ग्रपने गले नहीं मढ़ेंगे, जहन्नुम में जाग्रो तुम।'

'मैं हंस दिया, तो चली जातीं जहन्नुम में।'

वह भी हंस दी, 'ग्रा तो गई हूं जहन्नुम में। फिक्र तौंसवी ग्रौर जहन्नुम दोनों एक दूसरे का ग्रनुवाद ही तो हैं।'

'कितना गलत ग्रनुवाद है !' मैंने ठंडी ग्राह भर कर कहा, 'काश ! इस शरीर का दरवाजा भी तुम पर बन्द रहता।'

'कैसे बन्द रहता ? तुम तो ग्रपने थे, गैर थोड़े ही थे। चलो निकलो इस कब्र से बाहर चलें।'

ग्रौर मैं ग्रपनी घिसी-पिटी ग्रात्मा के साथ कब्र से बाहर निकल ग्राया। कब्र की मिट्टी ग्रभी कच्ची थी, पक्की नहीं की गई थी। शायद मेरे रिश्तेदार ग्रौर प्रशंसक पक्की कब्र के लिए ग्रभी चन्दा इकट्ठा करने में लगे होंगे।

जैसे ही मैंने कब्र से सिर बाहर निकाला, दो ग्रादमी जो शायद मेरी कब्र की मिट्टी खोद रहे थे, मुझे देखते ही दुम दबा कर भागे। मैंने पीछे से ग्रावाज दी, 'तुम कौन हो भाइयों ! मेरी कब्र पर दीया जलाने ग्राए थे या मेरा कफन चुराने ? ग्रौर ग्रब दुबारा भी ग्राग्रोगे या यह तुम्हारा ग्राखिरी विजिट था ?'

मगर मेरी ग्रावाज पर उनकी रफ्तार ग्रौर भी तेज हो गई। इतनी तेज कि उनमें से एक तो झाड़ी में उलझ गया ग्रौर फिर झाड़ी समेत ही भागता चला गया, ग्रौर जैसे दिल ही दिल में कहता गया।

'वाह फिक्र तौंसवी ! हमें तुम से ऐसी ग्राशा नहीं थी। बेकार में हमारा कीमती समय नष्ट कर दिया। इतने समय में तो हम किसी के खेत से गन्ने तोड़ लेते या भगवान की पूजा कर लेते।'

मुझे उनकी निराशा पर सचमुच दुःख हुग्रा कि मैं जीवन में तो किसी के काम नहीं ग्रा सका, मरने के बाद भी किसी के काम न ग्राया। ग्रगर वे कफन चोर थे तो कम से कम मेरा दो गज कफन ही ले जाते। ग्रौर ग्रगर दीया जलाने वाले थे तो भगवान उनके कुछ पाप ही क्षमा कर देता। मेरे कारण उन्हें कुछ तो मिल जाता। मगर ग्राह ! यहां भी उन्हें फिक्र तौंसवी के सिवा कुछ नहीं मिला।

मैंने देखा कि मेरी कब्र के बाहर एक तख्ती लगी हुई थी। कच्ची कब्र की तरह यह एक कच्ची सी तख्ती थी जिस पर कच्ची स्याही से लिखा था।

'यहां व्यंग लेखक फिक्र तौंसवी चिर निद्रा सो रहा है। वह मर गया, लेकिन ग्रपनी छोड़ी हुई हिमाकतों के कारण हमेशा ग्रमर रहेगा।'

जन्म तिथि : जिस दिन जर्मनी का कैसर मरा था।

मरण तिथि : जिस दिन कोई भी नहीं मरा, सिवाए फिक्र तौंसवी के।

तख्ती पढ़ कर मुझे याद ग्राया कि ये सब वाक्य मेरे ही एक लेख से चुराए गए हैं। मुझे ग्रपने प्रशंसकों ग्रौर रिश्तेदारों के बौद्धिक दिवालिएपन पर बड़ा ग्रफसोस हुग्रा कि वे मेरी मृत्यु पर दो ग्रोरिजनल वाक्य भी नहीं लिख सके। ग्रगर नहीं लिख सकते थे तो तख्ती के नीचे कम से कम मेरे लेख का उल्लेख ही कर देते।

जब मैं कब्र से बाहर निकला तो खुली फिजा ग्रौर ठण्डी हवा थी जिसमें निकट की रबड़ फैक्टरी का कड़वा कसैला धुंग्रा मिला हुग्रा था। यह फैक्टरी ग्रभी हाल ही में सेठ छगनालाल ने बनाई थी। कब्रिस्तान के निकट उसे फैक्टरी की ग्रनुमति कैसे मिल गई ? यह मैं नहीं जानता। लेकिन इतना मुझे जरूर मालूम हुग्रा था कि सेठ छगनलाल ग्रब भी सरकार के साथ पत्र-व्यवहार कर रहा था कि इस कब्रिस्तान को यहां से हटा कर ग्राबादी से दूर ले जाया जाए ग्रौर यह कब्रिस्तान मुझे ग्रलाट कर दिया जाए ताकि मैं फैक्टरी को फैला कर देश ग्रौर राष्ट्र के लिए ग्रधिक से ग्रधिक रबड़ पैदा कर सकूं।

मैंने सुना था कि लाशें सड़ांद पैदा करती हैं मगर यहां लाशों की बजाए रबड़

सम्रांत पैदा कर रही थी।

अपने कफन को तहबंद की तरह शरीर पर लपेटे हुए मैंने शहर जाने की ठानी। इर्द-गिर्द की कब्रों में पड़े हुए मुर्दों पर हसरत की एक निगाह डाली और उनसे कहा।

अब तो जाते हैं मयकदे से मीर
फिर मिलें गर खुदा लाया

शहर के बड़े गेट के बाहर एक स्टाल पर आज का अखबार देखा। खरीद नहीं सका, क्योंकि पैसे हो नहीं थे। अखबार में वही पुरानी खबरें थीं—घेराव, हड़तालें, भूमि छीनो आन्दोलन, कैबरे डांस के विज्ञापन। कुछ भी तो नहीं बदला था। अखबार पढ़ कर यूं लगा जैसे बासी रोटी खा रहा हूं। अचानक एक अखबार पर नजर पड़ गई जो मेरे एक ज्योतिषी श्रीमान खजूरानन्द की ओर से प्रकाशित किया गया था। लिखा था :

'फिक्र तौंसवी का देहान्त
भविष्यवाणी सच निकली'

प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य श्रीमान खजूरानंद जी ने दो वर्ष पूर्व व्यंगकार फिक्र तौंसवी की मृत्यु की भविष्यवाणी की थी कि आप बावन वर्ष और डेढ़ घंटे के बाद अपने बाल-बच्चों और ऋणदाताओं को रोता-धोता छोड़ कर चले जाएंगे। यह भविष्यवाणी मिनट सेकण्ड की हद तक सही निकली। अतः अपने भविष्य के हालात जानने के लिए ज्योतिषाचार्य खजूरानन्द की सेवाएं प्राप्त कीजिए।'

विज्ञापन पढ़ कर मैं उदास हो गया। मेरे जीवित व सकुशल लौट आने पर बेचारे खजूरानन्द के बिजनेस को शायद धक्का लगेगा। क्या मैं दुनिया का बिजनेस तबाह करने के लिए वापस आया हूं ? मैं खजूरानन्द से मिल कर उसे परामर्श दूंगा कि तुम एक खंजर उठा कर मुझे दुबारा मार दो।

मैंने एक स्कूटर रिक्शा वाले को इशारे से रोक लिया—'गुल मोहर पार्क चलोगे ?'

हमारे दिल्ली शहर में यह रिवाज था कि अगर स्कूटर रिक्शा वाले से चांदनी चौक चलने के लिए कहा जाए तो उत्तर देगा कि मैं तो इण्डिया गेट जाऊंगा और अगर इण्डिया गेट चलने के लिए कहा जाए तो कहेगा—शाहदरा चलना हो तो ले चलूंगा।

मगर इस स्कूटर वाले ने कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि टकटकी बांध कर मुझे घूरने लगा। मेरे बदन पर सस्ता सा रेशमी कफन बंधा देख कर बोला—'आप कौन हैं ? यह मुर्दे का कफन क्यों बांधा रखा है ?'

मैंने कहा, 'मैं फिक्र तौंसवी हूं। यह कफन मेरा अपना है, चुराया हुआ नहीं है।'

'फिक्रतौंसवी हो ?' स्कूटर ड्राइव घबरा कर अपनी सीट से उछला—'मगर उसका तो देहान्त हो गया है और तुम ?' यह कहते-कहते वह स्कूटर छोड़ कर तेजी से भाग गया। शायद वह मुझे भूत समझ कर भागा था। मेरी हालत भी किसी भूत से भिन्न नहीं थी। बेतरतीब बढ़ी हुई दाढ़ी, सिर की बजाये बदन पर कफन, भूख प्यास से हड्डियां बाहर और आँखें अन्दर। जिस्म पर जगह-जगह मिट्टी लिथड़ी हुई और पांवों से भी नंगा। (आश्चर्य है कि दफन करते वक्त मुर्दे को जूता क्यों नहीं पहना दिया जाता ?)

थकन, भूख, अपमान और उदासी—जो आम हिन्दुस्तानी के भाग्य में है, मैं भी उनका समूह बना हुआ था। अब मेरी पोजीशन अत्यन्त दयनीय थी। न मैं अपने घर जा सकता था न वापस कब्रिस्तान जा सकता था। सिग्रेट पीने की इच्छा तेजी से उठी मगर जेब में एक पैसा नहीं था। बल्कि सिरे से जेब ही नहीं थी। पहले अपने आपको फिक्र तौंसवी कह कर किसी भी दुकानदार से सिग्रेट उधार ले सकता था। मगर अब ? हालांकि मैं सौ फीसदी वही फिक्र तौंसवी हूं लेकिन कोई मुझे एक सिग्रेट तक उधार नहीं देगा। मरने के बाद फिक्र तौंसवी, अपनी साख खो चुका था। आह ! सिर्फ सात दिन में फिक्र तौंसवी क्या से क्या हो गया था।

थका हारा, आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ मैं पास के कम्युनिटी हॉल की सीढ़ियों पर जा बैठा। सीढ़ियों के ऊपर कपड़े का एक बड़ा सा नीले रंग का मोटो लगा हुआ था।

—व्यंगकार फिक्र तौंसवी की स्मृति में
शोक सभा—
—राईटर्ज एण्ड जर्नलिस्ट एसोसिएशन
की तरफ से—

मोटो पढ़ कर मेरे दिल में हूक सी उठी। जी चाहा कि मृत्यु के बाद इज्जत का कफन पहनाने वाले महानुभावों से मिलूं और उनके गले से लिपट-लिपट कर रोऊं और कहूं, 'यारो ! मेरी जुदाई में ठण्डी आहें मत भरो। मैं लौट आया हूं।'

मैं फूंक-फूंक कर कदम रखता हुआ हॉल के अन्दर दाखिल हुआ और हीन भावना के मारे सब से पिछली बेंच पर एक कोने में बैठ गया। सारे वातावरण पर उदासी और गम की घटाएं छाई हुई थीं। मंच के काले पर्दे के पीछे से एक मातमी धुन बज रही थी। कितनी मधुर धुन थी। मातम में भी कितनी गहराई और कितनी प्रतिष्ठा होती है। जी चाहा कि यह धुन बजती रहे—बजती रहे—बजती रहे। और मैं मरा रहूं—मरा रहूं—मरा रहूं।

इतने में सभा का सेक्रेटरी माईक पर

शेष पृष्ठ ३२ पर

बन्द करो बकवास

सायोनारा-सायोनारा, कल फिर आऊंगी सायोनारा...

बन्द करो बकवास, फैंसी ड्रैस पार्टी में जाओ, मैं कुछ नहीं कहता, पर गाना बन्द करो। वर्ना पड़ोसी समझेंगे हाय मारा, हाय मारा करके रो रही हो

कितना हंसीं है यह जहां, आंखों से बरसे मस्तियां, बर्सों की प्यास बुझी है, उल्फत भी नाच उठी है...

बन्द करो बकवास, ये खाना तो मेरे क्लब की महिलाओं के लिये है। तुम्हारे लिये फ्रिज में रोज की तरह दालें रखी हैं।

काहे को बुलाया मुझे बार-बार प्यार के नाम से.....

बन्द करो बकवास, मुझे क्या पता था कि तुम्हारा नाम भी चमेली है।

धारावाहिक उपन्यास

खौफनाक आवाज

लेखक :—
कैप्टन
युद्धवीर

भाग- ४

सेठ रघुनन्दन क्लब में आंधी-पानी रुकने का इन्तजार कर रहे थे कि धर्मवीर पांडे कार चुरा कर उनके घर पहुंचा। उन्हें लूट कर वह चम्पत हो गया। सेठ जी घर पहुंचे तो नौकर-नौकरानी बंधे पड़े थे और एक लाश कपड़ों की अलमारी में लटक रही थी। पुलिस ने सेठ को हत्यारा समझा तो उन्हें जासूस बलजीत का सहारा लेना पड़ा। बेटी के कमरे में सूटकेस निकला जिसमें भयानक खिलौने थे। वह सूटकेस प्रोफेसर नवलकिशोर का चुराया गया था। प्रोफेसर ने सारी कहानी बलजीत को जा सुनाई।

'तब तो आपको सावधान रहना चाहिए। दुश्मन दोबारा हमला कर सकता है।'

'हम सावधान ही हैं। हम चाहते भी यही हैं कि वह दोबारा हमला करे। तभी तो हमें पता चल सकेगा कि दुश्मन कौन है ?'

यह तो आप ठीक कहते हैं। मुझे आशा है कि अपनी कार्रवाई की सूचना आप मुझे भी देते रहेंगे।'

'जरूर दूंगा।' यह कहकर बलजीत ने रिसीवर क्रैडल पर रख दिया।

प्रोफेसर नवलकिशोर पाण्डे अपने कमरे में पीठ-पीछे हाथ बांधे टहल रहा था वह समझ नहीं पा रहा था कि उसका सूटकेस क्यों चुराया गया। यह और भी अचम्भे की बात थी कि चोर को उसके बनाए खिलौनों की भी पहले से जानकारी थी। उसने कभी किसी को बताया ही नहीं था कि जीवन की अनभूली घटनाओं को वह बुतों का रूप दिया करता था।

अचानक प्रोफेसर ने पीठ पीछे से हाथ उठाकर मुक्का ताना और मेज पर मारा। उसके होठों से निकला, 'जरूर यह मिसेज सोमा ने भेद खोला है। एक वही है जिसे मेरे खिलौनों का भेद मालूम था।'

इसके साथ ही वह सोमा से मुलाकात के बारे में सोचने लगा। वह मुलाकात भी बड़े अजीब हालात में हुई थी। कालिज में उसके साथी प्रोफेसर शुक्ला ने डाक्टरेट ऑफ फिलॉसफी की सनद पाने की खुशी में दावत दी थी। उसमें मिसेज सोमा भी शामिल थी। कितनी खुली तबीयत की महिला थी! हरेक विषय पर निर्भीक होकर बात कर लेती थी। सिगरेट और व्हिस्की तक मर्दों की तरह पीती थी।

जब उस मुलाकात के दौरान सेक्स का विषय छिड़ा था तो प्रोफेसर पाण्डे उसकी जानकारी पर दंग रह गया था।

मिसेज सोमा को अपने पति से अलग हुए दस वर्ष बीत चुके थे। मिसेज सोमा ने बिना किसी संकोच के कह दिया था कि मर्द और औरत के लिए सेक्स जरूरी है। यह कहते हुए उसने अपना अनुभव भी बताया था।

उसने जो कहा था, प्रोफेसर को वह शब्दशः आज भी याद है—'प्रोफेसर पाण्डे! मैं जब अपने पति से अलग हुई तो दो बातों ने मुझे एक महीने तक बहुत परेशान किया —एक सेक्स ने, दूसरा पैसे ने। न मेरे पास कोई मर्द रहा, न पैसा। नौकरी मुझे देर बाद मिली। पति से अलग होने के बाद मैंने वे दिन बड़ी मुश्किल से गुजारे।'

प्रोफेसर को सोमा के ये शब्द भी याद थे—'एक दिन मुझे कहीं जाना था। बेकारी, असन्तोष, निर्धनता ने मुझे इस हालत में ला पटका था कि मेरे पास बस का किराया तक नहीं था। मैं अपने एक पुराने मिलने वाले से कुछ उधार मांगने के लिए जाना चाहती थी। सड़क पर जा निकली। एक आ रही कार से लिफ्ट मांगी। कार रुक गई। उसे एक अधेड़ आदमी चला रहा था। उसने अगली सीट के बांयी ओर का दरवाजा खोल दिया और अजीब-सी नजरों से मुझे देखा।'

प्रोफेसर पाण्डे को वह बातचीत भी याद थी जो मिसेज सोमा और कार वाले के दर्म्यान हुई थी—

'आप कहां चलेंगी ?'

'एन० एम० रोड।'

'आप शायद भूखी है।'

'हां।'

मिसेज सोमा ने बताया था कि वह मुझे होटल में ले गया। वहां मुझे पता चला कि वह कुंआरा था। उसने जान-बूझकर शादी नहीं कराई थी। वह पत्नी नहीं, रखैल रखना चाहता था। उसने मेरी मन-पसन्द बात कह दी थी। मैं भी पति नहीं, प्रेमी पाना चाहती थी। हम दोनों में समझौता हो गया।'

प्रोफेसर को अपने कहे हुए शब्द याद आ गए—'आपसी फायदे की बात!'

इन शब्दों पर मिसेज सोमा हंस पड़ी थी। उसने कहा था—'हम एक-दूसरे के दोस्त बन गए। उसका नाम केवलकृष्ण भटनागर था। पार्क रोड पर उसका अपना बंगला था। पहली बार मुझे उसके बंगले पर अजीब-सा अनुभव हुआ कि सेक्स का एक अनदेखा रूप भी होता है। उसने मुझे दूर-दूर से ही प्यार किया और इसी में इतना संतुष्ट हुआ कि पूरे पांच सौ रुपये मेरे हैंडबैग में डाल दिये। दूसरे-चौथे दिन मैं उसके कहने पर जाती तो वह हर बार मुझे पांच सौ रुपये दे देता। यह खेल तीन सप्ताह तक जारी रहा। तंग आकर मैंने उसे भी छोड़ दिया। तब मेरे पास इतने रुपये जमा हो गए थे कि कोई काम तलाश कर सकूं।'

प्रोफेसर पांडे ने उसकी कहानी सुन कर फैसला किया था कि इस विषय पर एक बुत बनाएगा। उस दौरान उसने अपने बनाए खिलौनों के बारे में मिसेज सोमा के सामने चर्चा कर दी थी। सोमा उसके खिलौने देखने को बेताब हो उठी थी। वह पहली औरत थी, पहला व्यक्ति, जिसे प्रोफेसर ने

पने खिलौने दिखाए थे।

प्रोफेसर ने फिर से अपने हाथ पीठ छे कर लिये। वह सोचने लगा कि जिस सी को भी उसके खिलौनों का भेद मालूम था, वह मिसेज सोमा की जबानी हुआ गा। उससे पूछना होगा कि किसके सामने सने राज खोला था। पुलिस को यह शक तो हो सकता है कि जयदयाल को खिलौने ले ने मार डाला!'

प्रोफेसर पांडे अपने फ्लैट से बाहर कला और टैक्सी का इन्तजार करने लगा।

लाजपतराय मार्ग पर 'गंगोली' बिल्डिंग सामने प्रोफेसर नवलकिशोर पांडे ने टैक्सी कवाई। किराया चुका कर वह बिल्डिंग में हुंचा। सीढ़ियां चढ़ कर तीसरी मंजिल पर सने फ्लैट नम्बर १०७ का दरवाजा टखटाया।

कुछ देर इन्तजार के बाद वह यह देख र हैरान रह गया कि दरवाजे के नीचे से ल रंग की लकीर बाहर को आ रही थी।

'खू...न!' प्रोफेसर के मुंह से निकला। ण भर के लिए वह जड़-सा होकर खड़ा हा। उसने दरवाजे पर हाथ रखा तो ऐसा गा, जैसे वह अन्दर से बन्द नहीं था। हाथ दबाव डाल कर उसने दरवाजा पीछे को केल दिया। तभी वह एक कदम पीछे हट या। वह आंखें न झपका सका। उसकी खें फर्श पर जमी हुई थीं।

सामने सोमा सोई पड़ी थी। उसकी नों बांहें फैली हुई थीं। वह लेटी हुई । उसके सीने में खंजर धंसा हुआ था। ांखें अधखुली थीं।

प्रोफेसर पलट कर भाग जाना चाहता कि ठीक इसी समय उसे उन पत्रों की द आ गई जो प्यार के क्षणों में उसने सेज सोमा को लिखे थे। अगर वे पत्र लिस के हाथ लग गए तो प्रोफेसर पर पुलिस शक और भी पक्का हो सकता था।

प्रोफेसर कांप रहा था। वह सोमा के डरूम में जाकर चाबियां ढूंढने लगा। ाबियां उसे अलमारी के ऊपर मिल गईं। टकेस खोल कर उसने तेजी से तलाशी ली, गर उसमें कोई पत्र नहीं था।

दूसरा सूटकेस खोला तो उसमें अपने और केवल कृष्ण की फोटो मिल गई। और फोटो उसने अपनी जेब में रख ये। बाहर निकल कर उसने दरवाजा ड़ाया और जल्दी-जल्दी नीचे उतरा। सड़क पर पहुंच कर उसने टैक्सी ली और 'कारोनेशन होटल' के लिए रवाना हुआ।

बलजीत ने अपने कमरे में प्रोफेसर पांडे को देखा तो देखता ही रह गया।

प्रोफेसर के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

'आइये, आइये! आपकी रंगत क्यों उड़ी हुई है?' बलजीत ने पूछा।

'पा...नी!' प्रोफेसर ने बैठी हुई आवाज में कहा। फिर वह दौड़ कर कुर्सी में जा गिरा, जैसे उसे चक्कर आ गया हो। आंखों के आगे अंधेरा घिर आने से पहले वह बैठ जाना चाहता था।

'क्या बात है, आप इतने बौखला क्यों रहे हैं?' बलजीत ने पूछा।

अनिला पहले ही पानी लेने जा चुकी थी। जैसे ही वह आई प्रोफेसर ने उसके हाथ से गिलास झपट लिया। वह गटागट सारा पानी पी गया।

बलजीत उसे आंखें फाड़े घूरता रहा।

प्रोफेसर ने एक लम्बी सांस खींची और बोला, 'बलजीत बाबू! मुसीबत कभी अकेली

नहीं आती।' यह कहने के साथ ही उसने मिसेज सोमा से पहली मुलाकात, उससे प्यार मुहब्बत, खिलौनों की बात और उसकी लाश देखने तक की कहानी कह सुनाई।

बलजीत कुछ सोचने के अन्दाज में बोला, 'आप मिसेज सोमा से मिलने गए तो आपने वहां रोमांचक नजारा देखा। आप पत्र ले आए हैं। केवल कृष्ण की फोटो कहां है?'

प्रोफेसर पांडे ने पत्र और फोटो जेब से निकाल कर बलजीत के हवाले कर दिये।

बलजीत ने केवलकृष्ण की फोटो देखी तो आंखें झपकता रह गया। उसने हैरानी से कहा, 'यह तो जयदयाल की फोटो है! शायद कातिल ने केवलकृष्ण को जयदयाल साबित करने की कोशिश की।'

यह सुन कर प्रोफेसर भी दंग रह गया। उसने बलजीत के हाथ से फोटो ले ली। उसके मुंह से निकला, 'मैं भी कितना अहमक हूं! सोमा के फ्लैट में इतना घबरा गया कि मुझे यह फोटो जयदयाल की बजाए केवलकृष्ण की दिखाई दी। अब मेरा वह खिलौना पूरा हो जाएगा। जिसे मैं 'अत्याचार और सेक्स' का शीर्षक देना चाहता था।

उसके हाथ से फोटो लेकर राजीव और अनिला ने भी देखी।

अनिला और राजीव की हैरानी अभी दूर नहीं हुई थी कि टेलीफोन घनघनाने लगा।

'हलो! बलजीत ने रिसीवर उठा कर कहा।

'मैं इन्स्पेक्टर शर्मा बोल रहा हूं।' दूसरी तरफ से आवाज आई, 'मैंने यह बताने को फोन किया है कि जयदयाल की लाश पहचान ली गई है।'

'इन्स्पेक्टर साहब! वह जयदयाल नहीं, बल्कि केवलकृष्ण भटनागर है।'

'अरे! आप पहले से जान गए?'

'हां; यह भी कि वह पार्क रोड पर छोटे से बंगले में रहता था और कुंआरा था।'

शेष पृष्ठ ३९ पर

इतनी बड़ी बात म्हारे चारों तरफ ही रही थी और हमें आज तक पता नहीं लगा। गरीबों का देश में कितना शोषण हो रहा है। पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था जनसाधारण के गले पर पंजा गढ़ाये बैठा है। मजदूर और किसान पिस रहा है।
म्हारे मुहल्ले में जो चक्की है वहां तो गेहूं ही पिस रिया था कल मैंने खुद देखा था।

मेहनत कौन करता है? किसान खेतों में अपनी हड्डियां तोड़ता है। उसे क्या मिलता है? कुछ भी नहीं। पैसा आढ़तियों और महाजनों की संदूकों में जाता है। दिन-रात धुआं उगलने वाली मिलों और कारखानों में खून-पसीना मजदूर, वर्कर बहाता है। उसे दो सौ रुपल्ली मिलते हैं। सारी कमाई मिल मालिक हथिया लेता है। वर्कर के घर में टूटी हांडी और फूटा घड़ा मिलेगा। मिल मालिक के घर में सिल्वर कटलरी, कोठियां, कारें, फ्रिज, सोफा सैट, टी० वी०, कालीन, गलीचे और कोका-कोला की खाली बोतलें मिलेंगी। यह सब लूट का पैसा है, गरीब मजदूर का खून चूंसा गया है। उसका शोषण किया गया है।
हमें इस अन्याय के खिलाफ हथियार उठाने हैं।
फ्रिज, टी० वी०, सोफा तो म्हारे पास भी हैं?
फ्रिज, सोफा और टी०वी० तो म्हारे पास भी हैं।

हमारे पास जो है वह हमारे अपने बाजू की कमाई का पैसा है। हमने किसी मजदूर का शोषण करके यह पैसा नहीं कमाया।
चीयर्स-चीयर्स।

जो कुछ थमारे पास है वह अन्याय का पैसा नहीं है। थमारे बाप-दादा गुड़गांवे में जमीन छोड़ गये थे। बस गन्ने की कमाई का पैसा आ रिया है। इसमें थारा क्या कसूर है? थमारी कमाई तो खरा सोना है। आबजैक्शन ओवर रुल्ड।

चलो याड़ी, मान लिया कि बात अन्याय हो रिया है। मजदूरों का खून चूंसा जा रिया है। पूंजीपतियों ने चारों तरफ लूट का बाजार गर्म कर रखा है, लेकिन हम क्या कर सकते हैं? हमारे बस में क्या है?

बस यहीं तो हिन्दुस्तान मार खा गिया। सब कहते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। चारों तरफ अन्याय हो रहा है और हम सत्तू खाकर खटिया पर आराम से बैठे हैं। करना चाहें तो हम क्या नहीं कर सकते? हम पूंजीपतियों के खिलाफ जिहाद छेड़ सकते हैं। दुनिया को उलट कर रख सकते हैं। बारूद में आग लगाने के लिये एक चिंगारी काफी है। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। यह कहावत तो पूंजीपतियों ने गरीबों को बरगलाने के लिये रच रखी है। कैपीटेलिस्टस आर पेपर टायगर्स। हम बोत कुछ कर सकते हैं. हम मौत के दूत बनकर उनको पकड़ सकते।
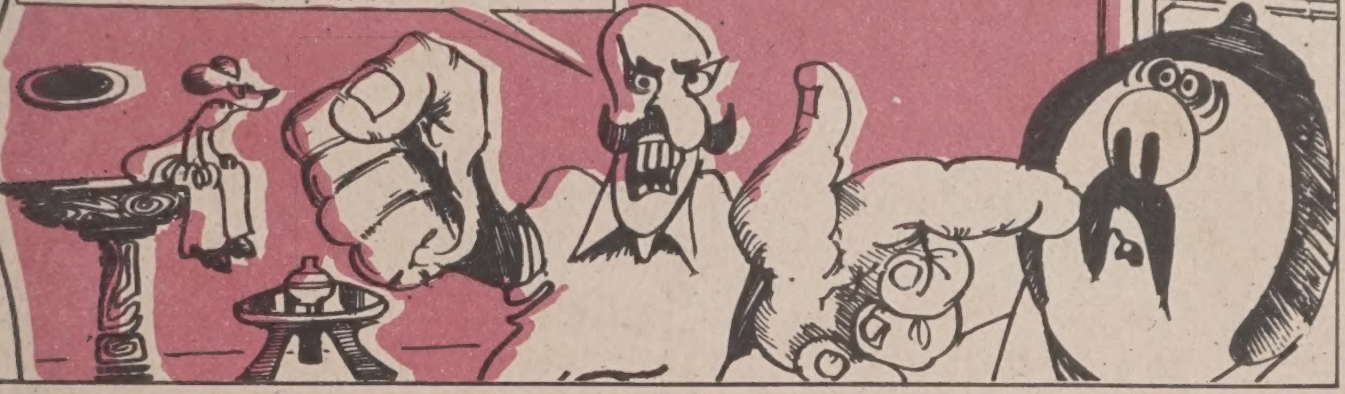
साल के तौर पर हम पूंजीपतियों की साजिश के खिलाफ यार उठा सकते हैं। सशस्त्र क्रांति का पात कर सकते हैं।
अब गलियों में खून की होली खेली जायेगी।

हम सेठ साहूकारों को मशीनगन से भून सकते हैं! वह चोर हैं और हम मोर बन सकते हैं। हम उनकी अन्याय की कमाई बन्दूक के जोर से छीन लेंगे और वह पैसा गरीब, मुसीबत में फंसे लोगों में बांट सकते हैं। डाकू मानसिंह और कठपुतली बाई के दिखाये रास्ते पर चल सकते हैं।
TAT A TAT
TAT A TAT
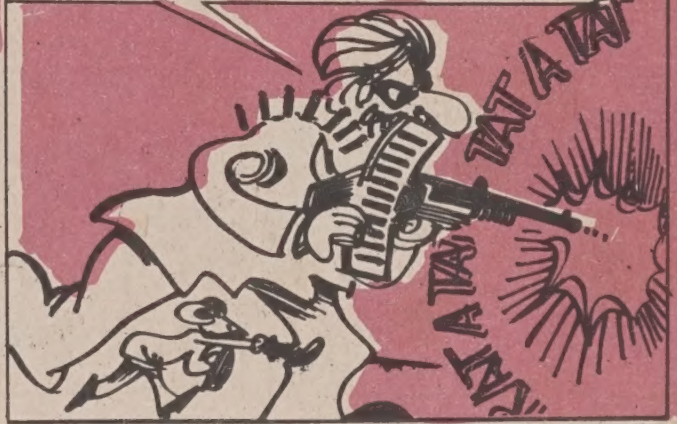
देखना? करना चाहे तो आदमी क्या नहीं कर सकता? अकेला है जमाने की हवाओं के रुख को मोड़ा जा सकता है। अब हम चुप नहीं बैठेंगे। हम गरीबों को और पिसते नहीं देख सकते।
इट इज नाउ और नेवर।

कुछ कर गुजरने के लिये बस विल-पावर की जरूरत होती है और कुछ नहीं। हम आज ही बीहड़ों की तरफ चल पड़ेंगे और डकैती गैंग की स्थापना करेंगे।
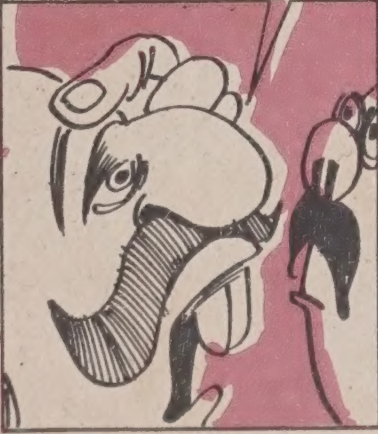
छोड़ो, मुझे जाने दो. जमना पार के जंगलों से सशस्त्र क्रांति मुझे आवाज देकर बुला रही है कि प्रियतम आ जाओ। हजारों, बरसों से तुम्हारी प्रतीक्षा में जंगलों में घूम रही हूं. छोड़ो।
कोई नहीं पकड़े है थमको। थमारी कमीज मेज से निकली कील में फंस गई है।
यह कील भी पूंजीपतियों की एजेन्ट है।

दुबाना गांव का महाजन खजानचंद एक नम्बर का पूंजीपति है। आसपास के सारे गामों के किसानों को उसने कर्जे के जाल में फंसा रखा है। सबकी जमीनें उसके पास गिरवी पड़ी हैं। उसके तीन मकान हैं। लाखों रुपया कैश और सोने-चांदी के जेवरों से भरी तिजोरियां हमें निमंत्रण दे रही हैं।

भाई जी खून खच्चर करना जरूरी है। थम यह क्या कह रिये हो कि एक दो आदमियों के पेट में खंजर घुसेड़ना है अगर वह डर के मारे ही बगैर गोली, खंजर चलाये सारे पैसे और जेवर दे दें तो फिर खून करने की जरूरत क्या से? म्हारा मतलब तो पैसे लूटने से है। खून देख कर मेरे दिल में होल-सा उठता है।

थमारे जैसे कायर और बुजदिल लोगों की वजह से ही नादिर शाह और मुहम्मद गोरी हिन्दुस्तान को लूट कर ले गये। यह क्यों नहीं सोचता कि गंदे पूंजीपतियों को इस दुनिया में जीने का कोई हक नहीं है। हम पूंजीवाद को जड़ से उखाड़ कर फेंकना चाहते हैं। इतना ही डर लगता है तो चूड़ियां पहन कर घर में क्यों नहीं बैठ जाता? इन्साफ खजान चन्दों का खून मांग रहा है। उसके खून से क्रांति की मांग में सिन्दूर भरा जायेगा।

सरदार, एक सच्ची बात बता रहा हूं कि मुझे पहले ही शक था कि यह पूंजीपतियों का एजेन्ट है। सी० आई० ए० से पैसा लेता होगा। पूंजीपतियों ने इसको हमारी जंग को नाकामयाब बनाने के लिये ही हमारे साथ छोड़ रखा है। यह समाजवाद का दुश्मन, गद्दार है।

इसका नाम सी से शुरू होता है। सिलबिल और सी. आई. ए. का नाम भी सी से शुरू होता है। इसके पूंजीवादी एजेन्ट होने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या चाहिये? इस गद्दार पर हमको नजर रखनी चाहिये। अच्छा तो यही होगा, इससे हथियार छीन लो।

देखो, आखिरी मौके पर अपना ही खून धोखा दे रहा है। इसके दिल का होल दूर करने के लिये कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। एक दिन का कोचिंग कैम्प लगाना पड़ेगा हमको यहां।
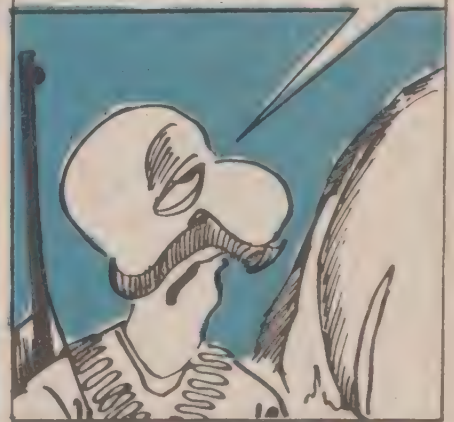
इस ठूंठ पर पेन्ट से हमने आदमी की शक्ल बनाई है। तू मिसाल के तौर पर इसको आदमी ही समझले। अब तुझे दौड़ कर आना है, इसे खंजर घोंपना है। इससे तेरे दिल की झिझक दूर हो जायेगी। पहले मैं बायनैट चार्ज करके तुझे दिखाता हूं।

आपके पत्र

दीवाना का नया अंक मिला, बहुत ही बेसब्री से इन्तजार कर रहा था। इस अंक में छुट्टन और मिट्ठन का नया कारनामा पढ़ने को मिला। साथ ही फिल्मी इन्टरव्यू तो बहुत ही अच्छा लगा।

इस अंक में 'बिटवा' हुकुम चन्द पक्षी का जो व्यंग्य है वह बहुत ही अच्छा लगा जो आजकल के नये जमाने के अनुसार है, वह सराहनीय है। स्थाई स्तम्भों का क्या कहना।

देवेन्द्र कुमार कौशिक—पीपरतराई

आइये बाबू जी, जल्द आइये, दीवाना की आखरी प्रति बची है। मैं दौड़ा-दौड़ा गया और दीवाना ले आया। घर पहुंचते ही छीना-झपटी होने लगी और वह फट गई। मैंने दूसरी किताब अपने किताब वाले से लाने को कहा। जब किताब आ गई मैं चुपचाप लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ने लगा। अगर पुराने जमाने की घटनायें आज हों, छुट्टन-मिट्ठन, फिल्मी टाइटल ने तो तहलका मचा दिया मोटू-पतलू और स्थायी स्तम्भों ने बहुत हंसाया और ज्ञान बढ़ाया। दीवाना मेरी पहली किताब है जो मुझे बहुत भाती है। **आलोक ए० पी—कानपुर**

प्यारी पत्रिका 'दीवाना' का मनमोहक अंक ४६ मिला। मुखपृष्ठ बहुत ही रोचक लगा। इस तरह अगर चिल्ली सड़क चलते लोगों के जूतों की पालिश करने लगे तो उन के व्यक्तित्व को धक्का लगेगा।

यह पत्रिका हास्यात्मक है। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि यदि कोई यह पत्रिका एक बार पढ़ ले तो हंसते-हंसते ही इस पत्रिका का दीवाना हो जायेगा। कृपया मेरी तरफ से डा० झटका को कह दीजिएगा कि वे गाड़ी इतनी तेज न चलायें। ऐसा करने से उनका ड्राइविंग लाइसेंस जब्त कर लिया जायेगा। आखरी चीख व बिटवा दोनों ही कहानियां बहुत पसन्द आई। छुट्टन और मिट्ठन एवं डा० झटका की प्लास्टिक सर्जरी पसन्द आई।

विमल कुमार जैन—तिनसुकिया

दीवाना का तरोताजा अंक नं० ४८ पढ़ा। मुखपृष्ठ काफी सुन्दर था। चिल्ली अच्छा जंच रहा था। काका के कारतूस अच्छे आवाज (मजेदार) वाले थे। पिल-पिल-सिलबिल, फैण्टम, मोटू-पतलू, चिल्ली लीला पसन्द आयी। 'क्यों और कैसे' स्तम्भ पाठकों को ज्ञान-विज्ञान में अच्छी वृद्धि करता है। दीवाना ही पाठकों की ऐसी पत्रिका है जो पाठकों का अच्छा मनोरंजन करती है। **डी० के०—मटाई**

दीवाना का नया अंक ४८ मिला। मुखपृष्ठ पर चिल्ली को स्वटर बुनते देखकर खुशी का ठिकाना न रहा। एक तो ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो दीवाना परिवार के सदस्यों को सर्दी से बचाने के लिए स्वेटर बना सके। लेकिन यह तो बताने का कष्ट करें कि ये श्रीमान चिल्ली हैं या श्रीमती चिल्ली। इस अंक में 'पुराने जमाने के लोग', 'फिल्मी टाइटल' में से 'अनुरोध' और 'गद्दार' का पोस्टर रोचक व सुन्दर हैं। प्रकाशित कहानी 'एक चांद के लिए' व 'केवल दस रुपयों के लिए' विशेष रोचक थीं लेखकों को बधाई स्थायी फीचर व स्तम्भ सभी रोचक और मनोरंजनपूर्ण थे। दीवाना परिवार को बधाई। **गोपाल सिंह—वाराणसी**

मैं आपके द्वारा प्रकाशित 'दीवाना' पत्रिका की हर प्रति को बड़े प्रेम के साथ स्वीकार करता हूं। खासकर मुझे 'चिल्ली' साहब बहुत पसन्द हैं। 'चिल्ली' की हरकतें मुखपृष्ठ में देखकर मैं इतना जोरों से हंसता हूं कि रोना तक भूल जाता हूं। मैं चाहता हूं कि दीवाना का हर अंक ऐसा ही हो।

दीपक ट्रांसपोर्ट वर्मा—बोकारो थरमल

दीवाना का अंक ४७ मिला। चिल्ली को टैंक चलाते देख दंग रह गया। किन्तु जब सारी बातें समझ में आयीं तो हंसी के फव्वारे फूट पड़े। इस अंक की सारी सामग्रियां रोचक थीं। 'मोटू-पतलू' पिलपिल-सिलबिल और 'चिल्ली लीला' ने तो हमारे सामने हास्य का खजाना ही रख दिया। 'काका के कारतूस' और 'चाचा बातूनी' ने भी खासा मनोरंजन किया। 'अर्थ-अनर्थ' अब अच्छे आ रहे हैं। इस अंक में विशेष 'सर्दियों का दीवाना मतलब' ने तो हंसा-हंसा कर दीवाना बना दिया। दीवाना के माध्यम से हमारा इतना अधिक मनोरंजन कराने के लिए आप बधाई के पात्र हैं। अगले अंक का बहुत ही बेसब्री से इन्तजार है।

अनिल कुमार गुप्ता—तवकरा

अंक नं० ४७ बहुत कठिनाई के बावजूद प्राप्त हुआ। मैं दीवाना का प्रत्येक अंक पढ़ता हूं लेकिन इस अंक ने तो हमें रात का सोना दुस्वार कर दिया, वजह यह थी कि इसमें प्रत्येक स्तम्भ सेर पर सवा सेर था। इस अंक में मुझे फिल्म जगत के जीव-जन्तुओं, सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, फोकटमल बनिया, छुट्टन और मिट्ठन, सिलबिल-पिल-पिल बेहद पसन्द आये। अगले अंक का मुझे इन्तजार है।

मु० इसराईल—ऐनास्लामपुर

अंक ४८ मिला, पढ़ कर बहुत खुशी हुयी। इस बार मुझे एक रुपए टैक्स यानि 'दीवाना' लेने के पीछे दो रुपया पच्चीस पैसा और भरने पड़े। वो इस तरह जब मैंने यह खरीदा तो मुख पृष्ठ पर इतना हंसा कि मेरे पेट में दर्द पड़ने लगा और दर्द के कारण मुझे डाक्टर के पास जाना पड़ा और इस तरह दवाई का बिल दो रुपए पच्चीस पैसे आया।

इस बार 'मोटू-पतलू' काफी अच्छा था, और मेरे नए कलाकार 'छुट्टन और मिट्ठन' के भी नए कारनामे यानि 'शिकार' अच्छा लगा।' केवल दस रुपए के लिए और 'एक चांद के लिए' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। इसके अलावा मदहोश, फैण्टम, परोपकारी, पंचतंत्र, दीवानी चिपकी, चिल्ली लीला, बंद करो बकवास तथा 'फिल्मी टाइटल घरेलू संदर्भ में' भी अच्छे रहे।

खत्री पीताम्बर के०—उल्हासनगर

नया अंक ४८ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ अत्यधिक सुन्दर था। पंचतंत्र, सिलबिल-पिलपिल व मोटू-पलतू विशेष रूप से सराहनीय थे। अन्य सामग्री भी रोचक थी। अगर आप फिल्म' स्टारों के परिचय की जगह खिलाड़ियों का परिचय छापें तो ज्यादा बेहतर होगा। कृपया कार्टून का साइज बताने का कष्ट करें।

राजीव ढल—मुरादाबाद

कार्टन का साइज है ३ इंच गुणा ४ इंच।

—सं०

मोटू पतलू

कुछ दिन पहले चेलाराम डिटेक्टिव ७०७ जेम्स बांड के कारनामे पढ़ रहा था और ब्रुक बांड की चाय पी रहा था। उसके पास बैठा अंगूठानन्द अपना अंगूठा चूस रहा था और अक्लमंद उल्लू अपनी अक्ल पर हैरान था। तभी वहां जोगिया कपड़े पहने डाक्टर झटका आ गये।
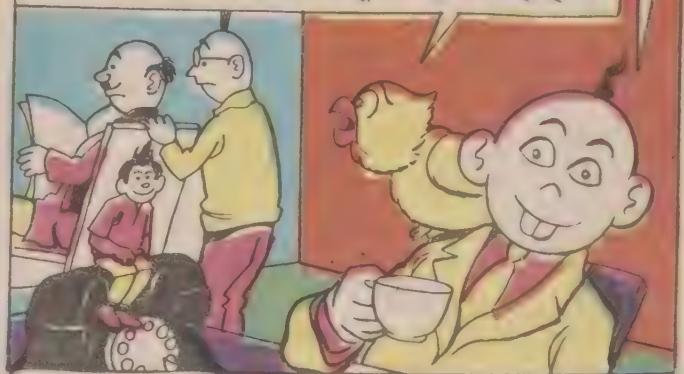
लगता है चारों ओर कोई खतरनाक जाल फैला हुआ है !
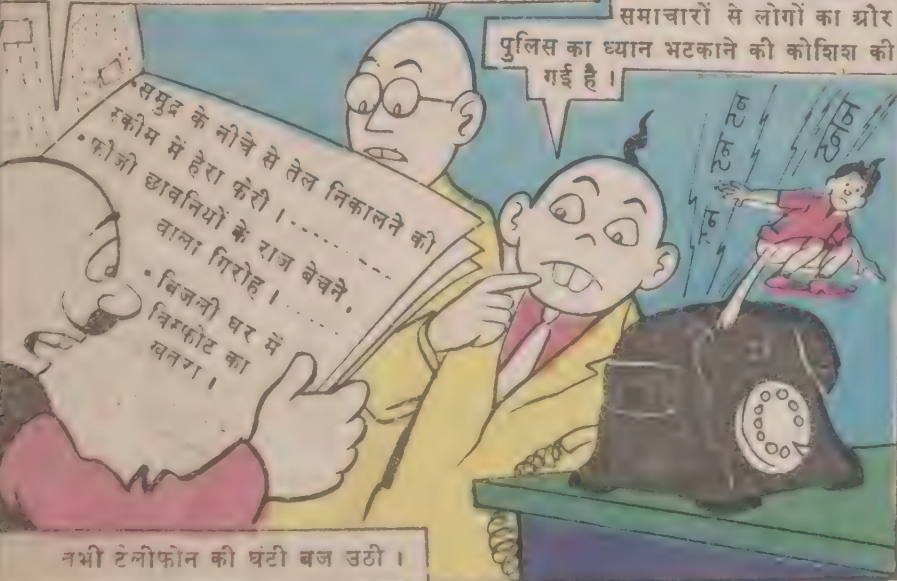
कोई और चाल है, इन समाचारों से लोगों का और पुलिस का ध्यान भटकाने की कोशिश की गई है।

•समुद्र के नीचे से तेल निकालने की स्कीम में हेरा फेरी।........
•फौजी छावनियों के राज बेचने वाला गिरोह।.......
•बिजली घर में विस्फोट का खतरा।

तभी टेलीफोन की घंटी बज उठी।

रिसर्च लैबोरटरी से एक फाइल चोरी हो गई है, फोन पर इससे अधिक नहीं बता सकता।
अच्छा, मैं फाइल स्टडी कर के बात करूंगा।

तभी बाहर से किसी ने पत्थर फेंका, जो खिड़की का शीशा तोड़ता हुआ अन्दर आया।

और पतलू को दिन में तारे नजर आ गये।
इसके साथ कोई पर्चा बंधा है।
मुझे तो अपनी जेब में छुपा लो।

लिखा है, तुम्हारे पास जिस केस की फाइल आ रही है उसमें टांग अड़ाने की कोशिश मत करना वरना टांग तोड़ कर हाथ में दे दी जाएगी।
किसने भेजा है यह पत्र ? कौन है खिडकी के पास ?
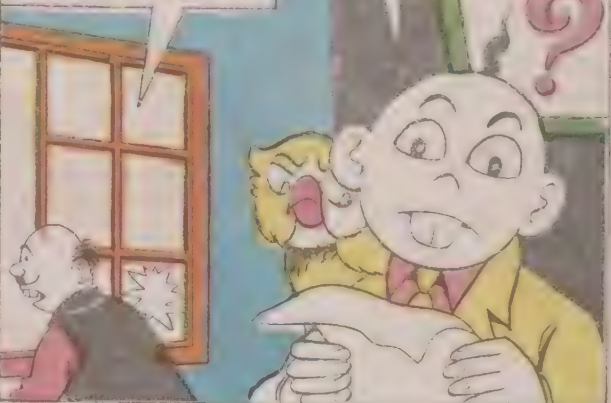
टांग क्या तोड़ेगा ! पहले मैं इसकी गर्दन मरोड़ दूंगा।
अरे क्या कर रहे हो ? छोड़ो मेरा कालर।

अब बताओ यह पत्र भेजने का क्या मतलब है ?
कौन-सा पत्र ? मैं तो इंस्पेक्टर वर्मा की यह फाइल लेकर आया हूं।
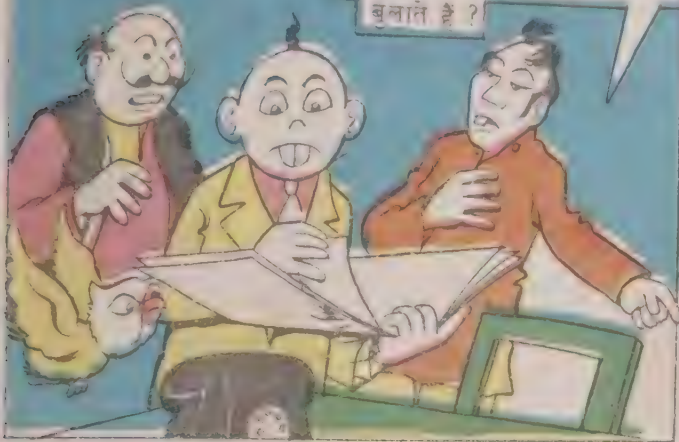
डाक्टर खुराना नहीं, केन्द्रीय रिसर्च लैबाट्री के सचिव डाक्टर खन्ना ! जो एंटी एटम डिवाईस पर खोज कर रहे हैं। संसार के बड़े-बड़े देश आज तक एटम बम न बनाने पर एक मत नहीं हो सके हैं।

एन्टी एटम बम डिवाईस बन जाने के बाद उनके एटमबम बेर की गुठली के बराबर भी हानिकारक नहीं रहेंगे और विश्व शांति के लिये मानवता के प्रति भारत का यह सबसे बडा उपहार होगा।

एन्टी एटमबम डिवाईस ! मतलब है इस मशीन का बटन दबा दो तो कहीं एटमबम गिरेगा तो इतना ही हानिकारक होगा जैसे कहीं गंडेरी गिरी हो ?

जैसे मूँगफली का दाना गिरा हो।

इस हिसाब से तो डाक्टर खन्ना की यह खोज करोड़ों और अरबों रुपये की है।
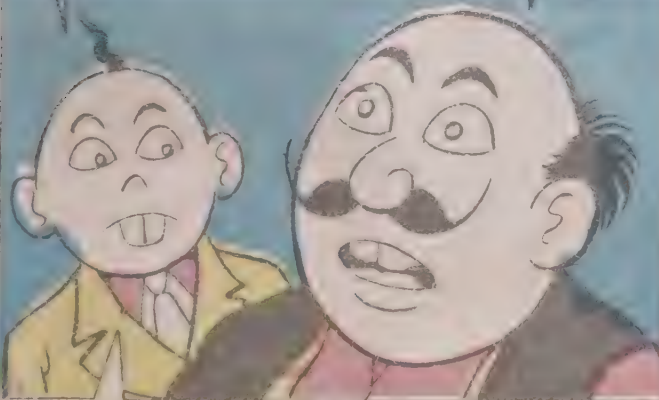
इस हिसाब से इससे भी अधिक मूल्यवान हैं डाक्टर खन्ना और इस खोज की वह फाइल जो चोरी हो गया है। उस फाइल में एन्टी एटम डिवाईस के आधे कागज थे बाकी आधे कागजों के लिये चोर फिर कोशिश करेगा।
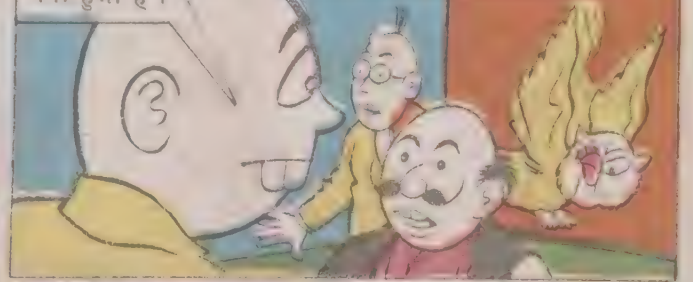
चलो, इस सम्बन्ध में पहले डा० खन्ना से बात करें।

फिर एक पत्र रखा है हमारी गाड़ी की सीट पर
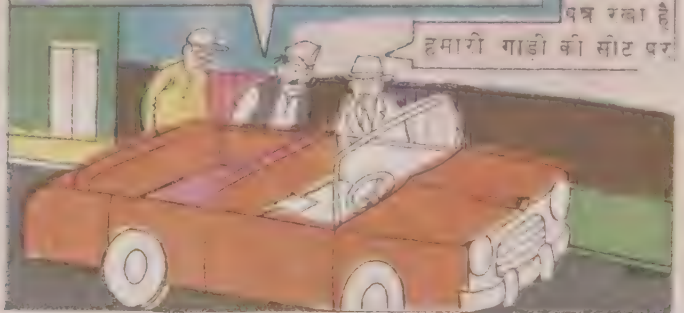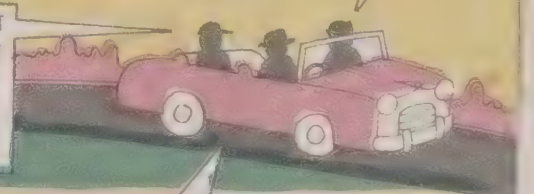
मैं पहले ही कहता था इधर-उधर की घटनाओं से पुलिस को उलझाने की कोशिश की जा रही है। ताकि आने वाली घटना की ओर किसी का ध्यान न जाए।

डाक्टर खन्ना की कोठी पर पहुंचे तो वहां उनकी लड़की रेखा से भेंट हुई ।

लगता है कि कोई पापा का पीछा कर रहा है
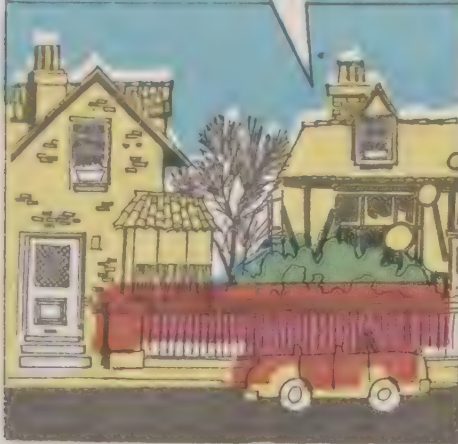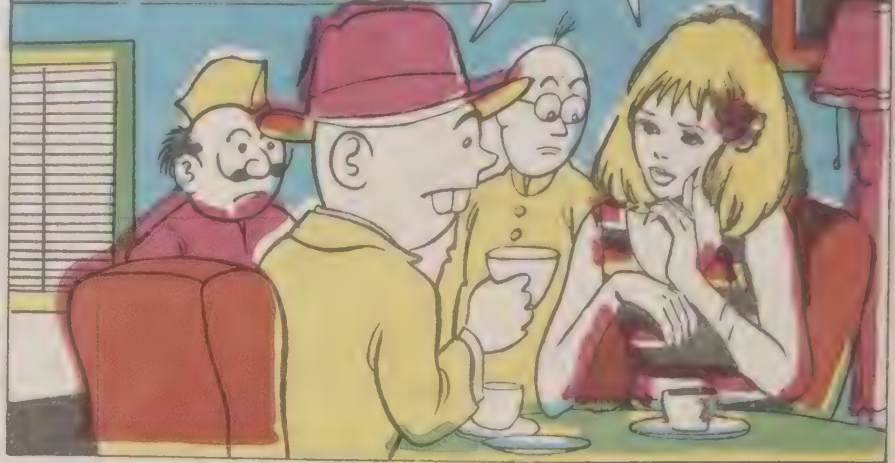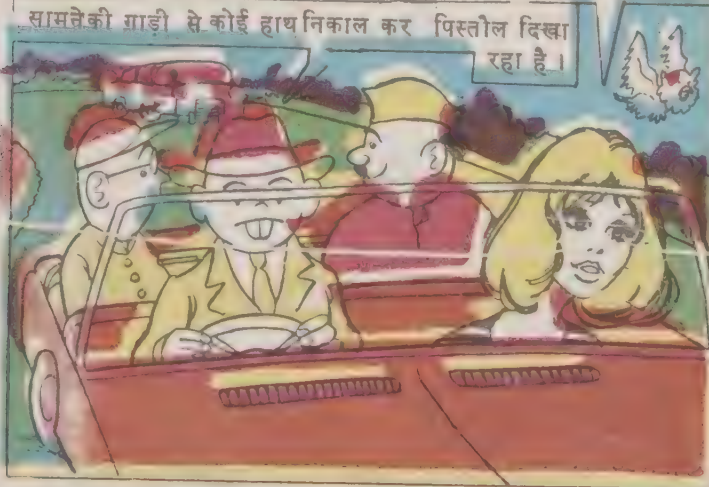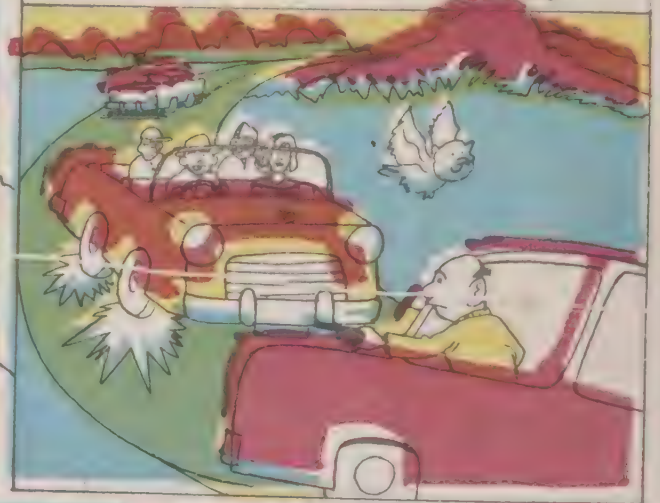
आगे सड़क तंग थी। डाक्टर खन्ना की गाड़ी ने जैसे ही मोड़ काटा वह सामने खड़े ट्रक के अन्दर घुसती चली गई।

और एक आदमी ने फटाफट गाड़ी का दरवाज बन्द कर दिया।
मछली जाल में फंस गई, भाग लो।

एटम बम से बांध कर उसका पटाखा बजायेंगे।
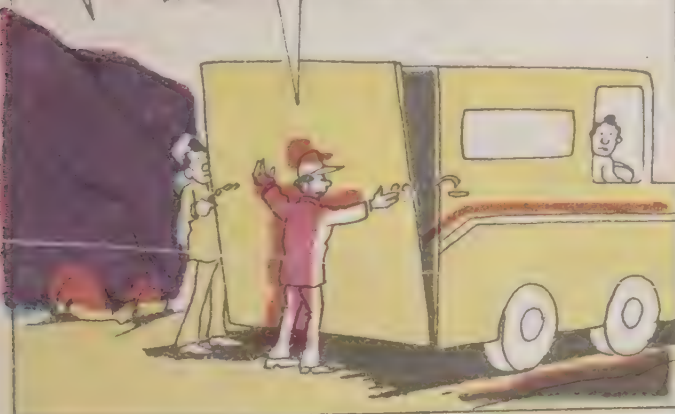
हमने भी इस डाक्टर को कम्पाउडर न बना दिया तो हमारा नाम नहीं। एक अरब रुपये का धंधा हो गया।

वह दांतों वाला खरगोश पीछे लगा था। बाकी तो किसी को होश ही नहीं।
उसकी गाडी के टायर तो हमारे आदमियों ने हले ही पंचर कर दिये हैं।
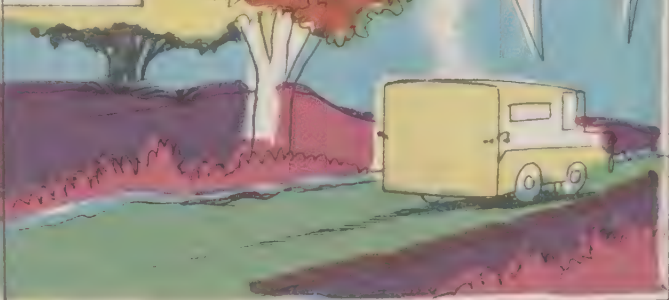
जब तक चेलाराम दौड़ कर मोड़ तक आया। काम करने वाले अपना काम कर चुके थे।
इधर ही आई थी डाक्टर खन्ना की गाडी, अब कहां गई?
क्या मोटर कार से बदल कर ट्रक बन गई?

यह भी कोई साईंस का कमाल था क्या? अब हम क्या करें?
रिसर्च लैबोरटरी के पास ही यह आश्रम है। गाड़ी यहां तो नहीं गई।
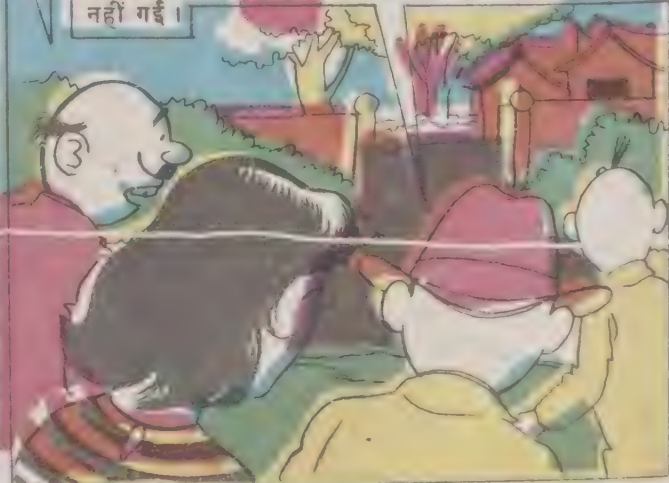
अरे यह तो वही आश्रम है जहाँ डाक्टर झटका ने अपना कब्रिस्तान खोला है।

क्या तुम इसे प्राकृतिक चिकित्सा कहते हो ?

पापा की गाड़ी उधर उस सड़क पर गुम हो गई और तुम समय नष्ट कर रहे हो।

क्या जोगी बनने आए हो बच्चा ? तुम मौत के मुँह में जा रहे हो बच्चा। सब कुछ त्याग कर भगवान के चरणों में आ जाओ बच्चा।

यह पिता जी भी कोई चलती रकम मालूम होता है चेला राम बच्चा !

और बड़े कारनामों और अधिक हंगामों के लिये आगामी अंक में अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलिये।

छुट्टन और मिट्ठन
बच्चा झमूरे का कुत्ता
पट्टूरा
छुट्टन और मिट्ठन का नया मित्र बना है बच्चा झमूरा। जो दूसरों के लिए जीता है, दूसरों के लिये मरता है और दूसरों की ही भलाई सोचता है। और बच्चा झमूरा से भी दो हाथ आगे उसका कुत्ता पट्टूरा।
बड़े काम का कुत्ता है, मेरा पट्टूरा। तुम इसका जितना ख्याल रखोगे, यह तुम्हें उतना ही सुख पहुंचायेगा।

मोटर में सैर करायेंगे और अच्छा खाने पीने को देंगे। हमारे पास सूखी रोटियों की कमी है क्या।
पर आजकल यह परहेज का खाना खा रहा है। जो कुछ तुमने पट्टूरे के लिए सोचा हो, वह तुम खा लेना।
हमारे मक्खन टोस्ट साफ ?

छुट्टन और मिट्ठन पट्टूरे को गाड़ी में सैर कराने चले तो वह सबसे आगे-आगे था।
गाड़ी मुझे चलानी है। तू मुझ से पहले स्टैपनि पर बैठेगा क्या ?

गाड़ी मुझे चलाने देगा या खुद चलायेगा।
इसे पैदल सैर कराओ।

आ गया सैर करके ? छुट्टन और मिट्ठन ने तुझे परेशान तो नहीं किया ? बहुत थक गया है क्या ? मैं दूसरों की भलाई का जितना ख्याल रखता हूं, पटूरा उससे भी अधिक रखता है । पर इस बात को आजकल समझेगा कौन ?
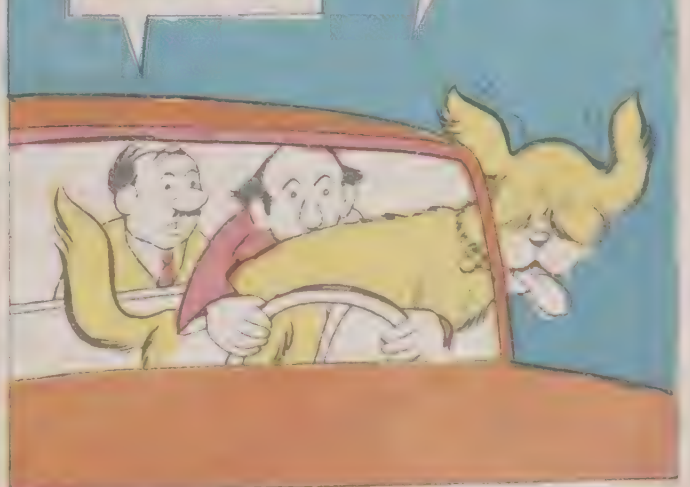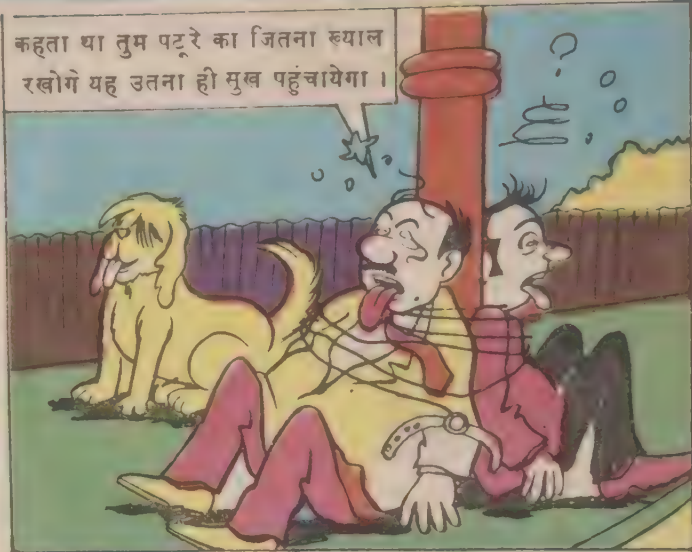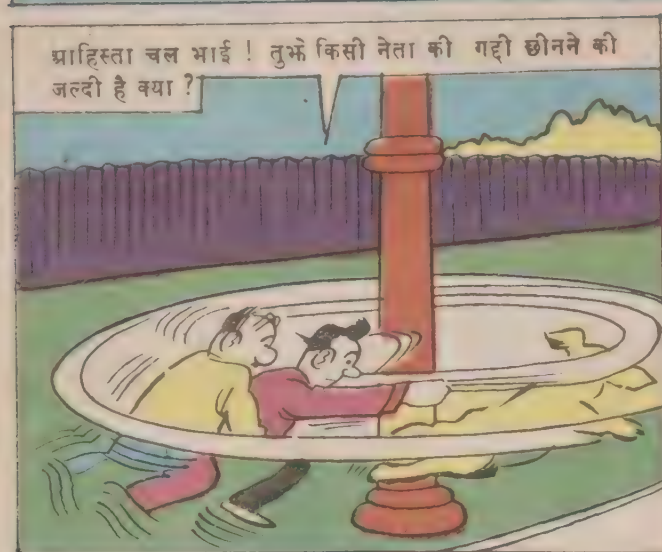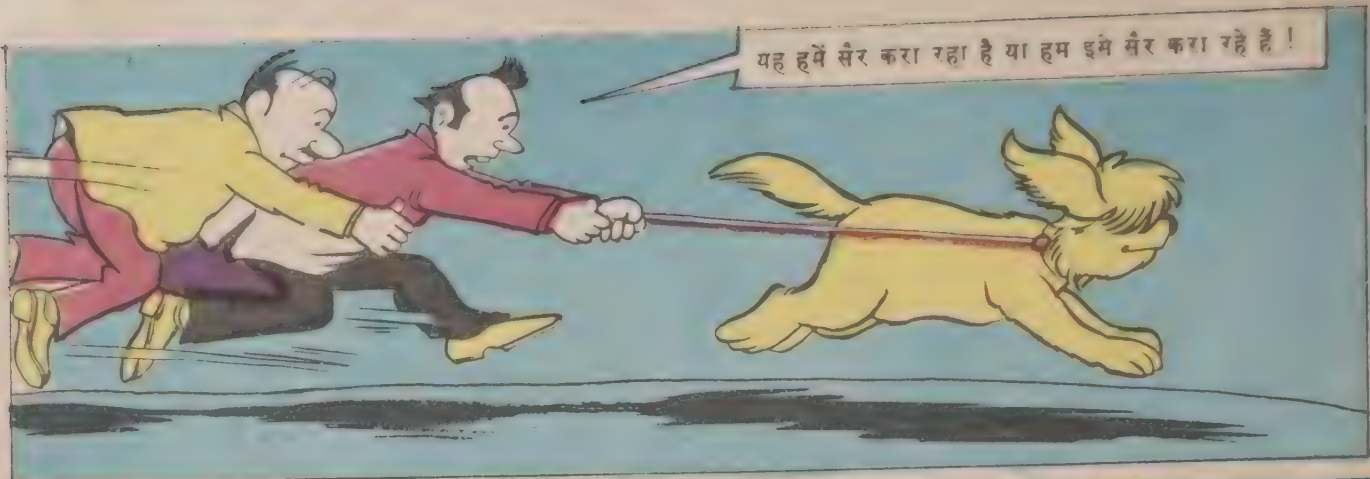
अब हालत यह थी कि छुट्टन और मिट्ठन वहीं सड़क के किनारे खम्बे से बंधे हुए थे और पटूरा उनके ड्राइंग रूम में आराम कर रहा था ।

हम कलाकारों के नये-नये कारनामे हर सप्ताह दीवाना में देखना न भूलिये ।

बिलियर्ड
एक सरसरी जानकारी

बिलियर्ड टेबल—बिलियर्ड टैबल का साइज—लम्बाई-चौड़ाई १२ फुट, ६ फुट १ १/२ इंच होता है और फर्श से इसकी ऊंचाई दो फुट ६ १/२ इंच तथा दो फुट १० १/२ इंच के बीच होती है। इस टेबल पर (पांच भागों वाला) सलेट बैंड रखा होता है जो बेज नामक कपड़े से मढ़ा होता है। इस सलेट बैंड के चारों ओर रबड़ कुशन तथा लकड़ी के कुशन की दो इंच ऊंची मेढ़ बनी होती है यह मेढ़ भी कपड़े से मढ़ी होती है। इस प्रकार बिलियर्ड का वास्तविक खेल क्षेत्र ११'-८" × ५'-६ १/२" रह जाता है। टेबल के चारों कोनों पर तथा लम्बाई में बीच में दोनों ओर पॉकेट यानि जेबें बनी होती हैं जिन में बॉल गिर सके। जेबों के साथ नीचे जाली बनी होती है जिसमें से बॉल आसानी से निकाला जा सके।

बिलियर्ड के मान्यता प्राप्त मंच २ १/१६ इंच व्यास की ३ गेंदों से खेले जाते हैं। इनका वजन बराबर होता है। एक गेंद लाल होती है और बाकी दो सफेद जिन्हें क्यू बॉल कहा जाता है। सफेद बॉलों में से एक पर दो काली बिन्दियाँ लगी होती हैं ताकि दोनों में पहचान हो सके। बिन्दी वाली बॉल स्पॉट कहलाती है। छड़ जिसे क्यू कहते हैं ४ फुट १० इंच लम्बी होती है जो एक ओर से पतली होती जाती है क्यू का भार १५ औंस से २१ औंस तक हो सकता है अब तक एश या मेपल लकड़ी की बनी क्यू का उपयोग होता आ रहा था अब एल्यूमीनियम की छड़ों का प्रयोग होने लगा है। छड़ के पतले सिरे पर चमड़े की नोंक गोंद से चिपकी होती है। इसी सिरे से बॉल को टक्कर मारी जाती है। इस खेल का मुख्य उद्देश्य अपने विरोधी से निश्चित समय में अधिक अंक प्राप्त करना होता है। या किसी निश्चित अंक संख्या जैसे १०० से १००० तक पहले अर्जित करना होता है।

खेल की शुरुआत टॉप कुशन के निकट स्थान पर लाल बॉल रखकर की जाती है। सफेद बॉल डी में रखा जाता है। पहला शॉट (यानि क्यू से टक्कर) लाल को मारकर करना होता है। पहले खिलाड़ी के असफल रहने पर दूसरा खिलाड़ी डी से लाल को या दूसरी सफेद को खेलता है।

अंक चार प्रकार से मिलते हैं।

१. पॉट—जब खिलाड़ी अपने सफेद बॉल से दूसरे बॉलों को पॉकेट में डालता है
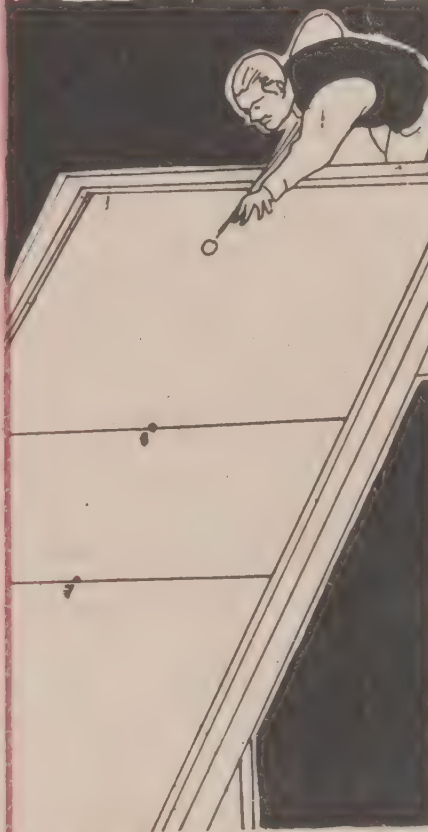
तो पॉट अंक मिलते हैं। सफेद बॉल डालने पर दो अंक और लाल डालने पर तीन अंक।

२. इन ऑफ—जब स्ट्राइकर का बॉल पॉकेट में जाने से पहले विरोधी के सफेद बॉल या लाल को टक्कर मारता है तो इन-ऑफ अंक मिलते हैं। लाल टक्कर पर तीन अंक व सफेद पर दो अंक।

३. कैनन—कैनन अंक तब प्राप्त होते हैं जब स्ट्राइकर का बॉल लाल सफेद दोनों बॉलों को एक ही स्ट्राइक में टक्कर मार लेता है। इसके दो अंक मिलते हैं।

४. जब स्ट्राइकर का बॉल दोनों दूसरे बॉलों को टक्कर नहीं मार पाता तो विरोधी को एक अंक मिलता है। और यदि वह बॉल दूसरे दोनों बॉलों को छूकर पॉकेट में चला जायें तो विरोधी को तीन अंक मिलेंगे।

विश्व गैर पेशेवर बिलियर्ड चैम्पियन शिप भारत को

माइकेल फरेरा

पाठकों को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि भारत ने बिलियर्ड में उपरोक्त चैम्पियन शिप जीत ली है। सच पूछा जाये तो खेल प्रेमियों के लिए ऐसा सुखद समाचार बरसों बाद ही सुनने को मिल रहा है कि किसी खेल में तो भारत किसी क्षेत्र में विश्व चैम्पियन है वरना तो हर खेल में मिट्टी पलीत ही हुई जा रही है।

भारतीय चैम्पियन माइकेल फरेरा ने फाइनल में ब्रिटिश चैम्पियन बॉब क्लीज को रोमांचक सख्त मुकाबले में अन्तिम मिनटों में पछाड़ कर चैम्पियन शिप जीती। यह खिताब अब दो वर्ष (पामडेल इंश्योरेंस वर्ल्ड बिलियर्ड चैम्पियन शिप) के लिए भारत को मिला रहेगा। तीस नवम्बर को पामलेक मोटर इन (मेलबोन) में हुआ यह संघर्ष सचमुच ही बहुत तगड़ा था। खेल के अन्तिम चरण तक फरेरा ३०० अंकों से पिछड़े रहे थे। अन्तिम चरण में फरेरा ने कमाल कर दिखाया। खेल समाप्त होने के १० मिनट पहले तक उन्होंने अंकों का अन्तर कम करके केवल ३० तक ला दिया और अन्तिम दस मिनटों में तो उन्होंने ऐसे हाथ दिखाये कि अन्त में १३६ अंकों से आगे होकर विश्व खिताब जीत लिया।

फरेरा बम्बई निवासी हैं। बम्बई के ही विलसन जोन्स पहले १९५८ और १९६४ में यह चैम्पियन शिप जीते थे। फरेरा ३९ वर्ष के हैं और यह उनका सातवां प्रयास था।

फरेरा ने कुल २६८३ अंक अर्जित किये और बॉब क्लोज ने २५६४। अब फरेरा वहां से न्यूजीलैंड में होने वाले विश्व ओपन में भाग लेने गये हैं।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

टेनिस कैसे खेलें

बैक हैंड से आक्रामक स्ट्रोक—इस स्ट्रोक के लिए आपका दाहिना कंधा आगे होगा और आपका दाहिना पैर बाएँ पैर की तुलना में टेबल के निकट होगा। इस स्ट्रोक में भी शरीर का भार स्ट्रोक में पिछले पैर से अगले पैर में जाएगा; क्योंकि बैक हैंड की पहुंच छोटी होती है। अतः आप गेंद को शरीर के निकट मोटे तौर पर बाज़ू की आधी लम्बाई की दूरी पर हिट करते हैं। सामान्य तौर पर बल्ले और गेंद का सम्पर्क-बिंदु दाहिने पैर से लगभग १२ इंच आगे और कुछ बाईं ओर को होगा। इस स्ट्रोक में फोर हैंड की तुलना में बल्ले का घुमाव छोटा होता है, परन्तु अच्छा यही होगा कि शुरू में इस स्ट्रोक के लिए धीमी गति से बाज़ू को पूरा घुमाया जाये, ताकि गेंद को शीर्ष स्पिन का निरापद उठाव मिल सके, फिर बाद में घुमाव केवल कोहिनी तक सीमित रह जाना चाहिए।

बाद में इस स्ट्रोक में कलाई का प्रयोग किया जाना चाहिए, जब तक आप केवल कोहिनी तक घुमाव में दक्ष नहीं हो जाते, तब तक इस शाट में कलाई का उपयोग करना हितकर नहीं है।

आप देखेंगे कि एक ओर से या एक पार्श्व से दूसरे में जाने में धड़ और पैरों को यथेष्ट घुमाना पड़ता है। इसलिए अनेक आक्रामक खिलाड़ी एक पार्श्व से ही आक्रा-स्ट्रोक पर जोर देते हैं, जबकि दूसरे पार्श्व की भूमिका आक्रमण में गौण हो जाती है। यदि आप इस नीति को अपनायें, तो जब आपके पैर 'गलत' स्थिति में हों तब भी आप अपने कमजोर पार्श्व में धीमी ड्राइव लगा सकते हैं बशर्ते आप अपने धड़ को उपयुक्त दिशा में घुमाना न भूलें।

जिस समय आपके पैर सही स्थिति में न हों तो गेंद को जोर से हिट न करें; क्योंकि इससे हमेशा पाइंट से वंचित होना पड़ता है।

ध्यान रखना चाहिए कि अनेक पाइंट शक्तिशाली ड्राइवों की अपेक्षा गेंद की दिशा की ओर लम्बाई में परिवर्तन और स्ट्रोक क्रम में चतुराई से किये गये परिवर्तनों से जीते जाते हैं।

फ्लैट-किल शाट—यदि आपको काफी ऊंची गेंद मिले, विशेपकर जब इसने नेट के निकट टिप्पा खाया है, तब आप इसे फ्लैट-किल शाट से हिट कर सकते हैं, जिसमें शीर्ष-स्पिन साधारण-सी होगी।

फ्लैट-किल शाट के बाद बल्ला गेंद से होता हुआ तनिक ऊपर को उठता सा आगे की ओर जाएगा। जब भी कोई आक्रामक स्ट्रोक लगाए, आपको यह निश्चय कर लेना चाहिए कि इसमें कितनी शीर्ष स्पिन देनी आवश्यक है और कितना फ्लैट हिट लगाया जा सकता है, फिर इसके अनुरूप ही आपको अपने बल्ले का घुमाव करना होगा, जो शीर्ष-स्पिन के ऊर्ध्वाधर उठाव और फ्लैट-हिट का क्षैतिज-बढ़ाव के बीच का होगा।

ये सिद्धान्त फोर हैंड और बैक हैंड ड्राइवों—दोनों पर ही लागू होते हैं।

फोर हैंड ड्राइव—इस प्रकार का स्ट्रोक प्रतिद्वन्द्वी को टेबल से दूर हटाने, उसके निकट से गेंद तेजी से निकाल देने अथवा उसे गेंद ऊंची लौटाने के लिए बाध्य करने और 'चोप' की गई गेंद को उठाने में काम आता है और इस प्रकार आपकी आक्रामक स्थिति जारी रहती है।

बल्ले का कोण—ऊंची गेंदों या शीर्ष-स्पिन वाली गेंदों के विरुद्ध बल्ले का ऊपरी सिरा आगे रहना आवश्यक है।

नेट के बराबर ऊंचाई वाली गेंदों के विरुद्ध बल्ला लगभग ऊर्ध्वाधर रहना चाहिए।

नीची अथवा बहुत अधिक मात्रा में 'चोप' की गई गेंदों के विरुद्ध बल्ले का ऊपरी सिरा पीछे को रहना चाहिए।

इसी ऊंचाई की नेट में निकट टिप्पा खाने वाली गेंद को 'मारक' शाट के लिए सम्भवतः ड्राइव कर दिया जाता, अर्थात् खिलाड़ी की बाज़ू के घुमाव को थोड़ी-सी शीर्ष-स्पिन के साथ अधिक आगे को ले जाया जाता।

बैक हैंड ड्राइव—इस प्रकार का स्ट्रोक प्रतिद्वन्द्वी को टेबल से दूर हटाने, उसके पास से गेंद को तेजी से निकाल देने या उसे गेंद ऊंची लौटाने के लिए मजबूर करने तथा 'चोप' की गई गेंद को उठाने में काम आता है और इस प्रकार आपका आक्रमण लगातार जारी रहता है।

आवश्यकतानुसार सीधे टेबल की ओर खड़े होकर भी यह ड्राइव शाट लगाया जा सकता है। परन्तु इससे स्ट्रोक की शक्ति में कुछ कमी आ जाएगी।

नेट के निकट की सुगम गेंदों के लिए दाहिना पैर यथेष्ट आगे रहना चाहिए और स्ट्रोक के बाद बल्ले का घुमाव अधिक आगे की ओर रहना चाहिए। इस प्रकार के स्ट्रोक में कलाई का उपयोग भी सफलता पूर्वक किया जा सकता है, परन्तु तब तक नहीं, जब तक कि खिलाड़ी अपनी कोहनी तक के बाज़ू के घुमाव में दक्ष न हो जाए।

रक्षात्मक खेल—यद्यपि आपको दी गई यह सलाह उचित है कि आक्रामक खेल से पूर्व आप अपने सुरक्षात्मक खेल को सुधारें, परन्तु यह भी आवश्यक है कि आप यह जानें कि आपका प्रतिद्वन्द्वी आक्रामक खिलाड़ी क्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इसीलिए आक्रामक खेल की जानकारी रक्षात्मक खेल की जानकारी से पहले दी गई है।

यदि रक्षा का तात्पर्य प्रतिद्वन्द्वी के स्ट्रोकों का उत्तर देना और गेंद की गति को धीमा करना है, तो आप यह भी अनुभव करेंगे कि रक्षा की पहली पंक्ति मध्य अथवा मिश्रित खेल है, खासकर ब्लाक और पुश शाट, परन्तु यदि प्रतिद्वन्द्वी ड्राइव शाट पर अड़ा है तो इसका उचित उत्तर लम्बी दूरी के चोप स्ट्रोक हैं। इसका यह कारण है कि टेबल से पीछे हट कर खड़े होने से खिलाड़ी को गेंद देखने के लिए अधिक समय मिलता है और वह गेंद को उस समय खेल सकता है, जब उसकी अधिकांश गति समाप्त हो चुकी होती है तथा उसके स्वयं अपने शाट की गति टेबल पर वापस लौटते-लौटते कम हो जाती है। इस प्रकार वह बिना खतरे के गेंद को जोर से 'चोप' कर सकता है और गेंद को पृष्ठ-स्पिन मिल जाती है।

उच्च स्तर के रक्षात्मक खेल में खिलाड़ी का पीछे हटना भी इच्छित स्ट्रोक से सम्बन्धित पद-संचालन का अंग बन जाता है। इसका एक खास उदाहरण है, गेंद के टकराव के प्रभाव को निष्फल करने के लिए शरीर के भार को पीछे की ओर हटाना। रक्षात्मक खेल की सबसे महत्वपूर्ण बात खिलाड़ी का उपयुक्त ढंग से खड़ा होना है। इसका कारण यह है कि जब तक गेंद सरलता से लौटाई जाती रहे, तो गेंद को 'चोप' करना या अन्य कोई स्पिन स्ट्रोक लगाना आवश्यक नहीं है।

क्रमशः

फैण्टम और
ज्वाल देवता

एक और मुसीबत हम लोगों पर आ गई है… पता नहीं वो क्या है, मगर इसका असर हमारे नोजवानों पर हो रहा है।
जंगल के मुखिया की मीटिंग…
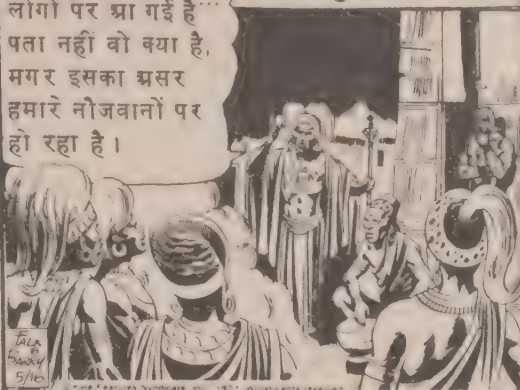
दिन को ये बेहोश से रहते हैं।

और रात को भूखे भेड़ियों की तरह राहगीरों को लूटते हैं उनको जान से भी मार देते हैं।

यह सब हमारे शांतिमय जंगल को क्या हो गया है?
हमारे यहां तो यह कहा जाता था कि…

…एक सुन्दर लड़की हीरे जवाहारात पहनकर आधी रात को कहीं भी चली जाये उसे कोई खतरा नहीं था।

लेकिन अब रात को हमें ऐसा लगता है कि हर मोड़ पर कातिल और लूटेरे खड़े हैं…यह सब क्यों है फेण्टम?
मुझे भी नहीं पता? …अरे?
!!!

उन तीनों को मेंने रास्ते में देखा था रुक जाओ…
क्या हुआ फेण्टम?

ओह!
ओह!

यही है वो जो एक राहगीर को मारने लगा था और बाकी दोनों ने मुझ पर हमला करना चाहा…
में इनके बारे में ही तुम्हें बता रहा था…
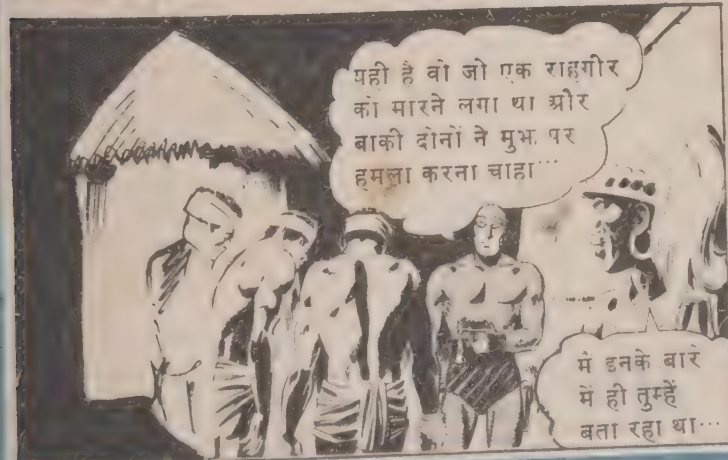
दिन को बेहोश पडे रहते हैं… और रात को बिना मतलब घूमते रहते हैं।
मुझे अपने हाथ दिखाओ…
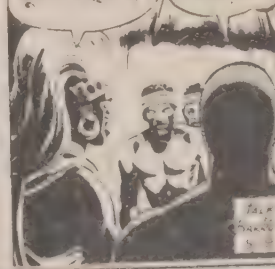
कहना मानो!
हममम… मुझे इसी बात का शक था।
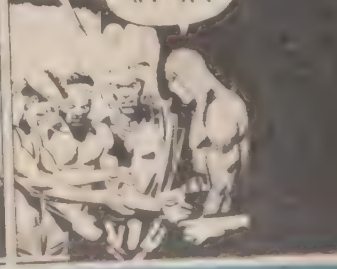
गेंद ढूंढो प्रतियोगिता

सामने दी गई तस्वीर में से गेंद को मिटा दिया गया है, जहाँ आप समझते हैं कि गेंद को होना चाहिए वहां आप केवल (×) का निशान बना दीजिए।

आप एक से ज्यादा प्रवेश पत्र भेज सकते हैं पर प्रत्येक प्रवेश पत्र के साथ कूपन होना अनिवार्य है। एक तस्वीर पर केवल एक ही स्थान पर निशान लगाइए। एक से अधिक स्थानों पर निशान लगाने पर उस तस्वीर को प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जायेगा। कूपन भर कर तस्वीर सहित आज ही भेजिए यदि इस प्रतियोगिता के एक से अधिक विजेता हुए तो इनाम की राशि उनमें बराबर-बराबर बांट दी जाएगी। सम्पादक का फैसला आखिरी फैसला होगा।

नाम ____________

पता ____________

____

अंतिम तिथि :- 21 जनवरी 1978

प्र० : जुगनू के रात में चमकने का कारण क्या है ?

रमेश कुमार गोयल—दिल्ली

उ० : जुगनू को चमक सदा ही सबके मन में कौतूहल पैदा करती है। बच्चे तो इन्हें देख कर इतने प्रभावित होते हैं कि कभी पकड़ कर बोतल में डाल लेते हैं, तथा कभी हाथ में ही पकड़ कर इनकी चमक देखते रहते हैं। इसकी चमक के बारे में अभी तक वैज्ञानिक भी कोई संतोषजनक हल नहीं निकाल पाये हैं।

जुगनू के शरीर का प्रकाश और प्रकाशों के समान ही होता है, केवल इसमें गर्मी नहीं होती। जुगनू में ये दीप्तिशीलता लुसीफरीन नामक एक तत्व से उत्पन्न होती है। ये औक्सीजन के साथ मिल कर प्रकाश उत्पन्न करता है। परन्तु प्रकाश उत्पन्न करने के लिये लुसीफरेज का होना भी आवश्यक है। ये तत्व भी जुगनू के शरीर में होता है। इन्हीं सब तत्वों के कारण जुगनू प्रकाश उत्पन्न करता है।

ऐसा प्रकाश प्रयोगशाला में वैज्ञानिक भी उत्पन्न कर सकते हैं, परन्तु ये तत्व उन्हें जुगनू से ही लेने पड़ते हैं। अभी तक वैज्ञानिक इन्हें बनाने में समर्थ नहीं हो पाये हैं। अभी तक ये प्रकृति का भेद ही बने हुए हैं।

जुगनू क्यों चमकता है इसके कई कारण हो सकते हैं। हो सकता है इस चमक से जुगनू दूसरे जन्तुओं से अपना बचाव भी कर सकता है। क्योंकि चमक से डर कर दूसरे जन्तु इन्हें न खाते हों।

प्र० : मक्खी उडते समय पंख क्यों नहीं हिलाती और किसी वस्तु पर बैठ कर पैर क्यों रगड़ती है ?

दिनेश—जालन्धर

उ० : मक्खी संसार में प्राचीनकाल से ही पाई जाती है। बीसवीं सदी के आरम्भ तक हमें बिलकुल पता नहीं था कि भोली-भाली दिखने वाली घरेलू मक्खी मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु है और ये भोली मक्खी कीटाणु इधर से उधर पहुंचा कर हजारों मनुष्यों की मृत्यु का कारण बनती है। मक्खी उड़ते समय अपने पंख इतनी जल्दी-जल्दी हिलाती है कि हमें उनका हिलना बिलकुल दिखाई नहीं देता।

मक्खी को अपने पैर रगड़ते देख कर हमें जान लेना चाहिये कि वो अपने शरीर से गन्दगी छुड़ा रही है। ये गन्दगी कुछ भी हो सकती है, किसी भयंकर रोग के किटाणु भी मक्खी इसी प्रकार रगड़ कर अपने शरीर से दूसरी वस्तुओं पर छोड़ देती है। ये किटाणु मक्खी के शरीर पर गन्दगी के ढेर, मल-मूत्र इत्यादि पर बैठने से चिपक जाते हैं।

खुर्दबीन से देखने पर पता चलता है कि मक्खी का सारा शरीर खुरदरे बालों से भरा है इसी कारण मक्खी जहां भी बैठती है हर प्रकार की गन्दगी उसके पैरों तथा शरीर पर चिपक जाती है। खाने इत्यादि पर बैठ कर मक्खी पैर रगड़ कर यही गन्दगी हमारे खाने पर छोड़ देती है।

प्र० : संसार में पाया जाने वाला सबसे बड़ा मोती कितना बड़ा है।

अहमद हसन—लखनऊ

उ० : मोती एक सुन्दरता की वस्तु है, हजारों वर्ष से मनुष्य इन्हें मूल्यवान वस्तु के रूप में संचित करता रहा है। अनुमान है कि सबसे पहले लगभग चार हजार वर्ष पूर्व चीनियों को नदियों में पाई जाने वाली सीप से मोती मिले थे। छटी तथा सातवीं शताब्दी में मोती संसार के अन्य तटवर्ती भागों भारत परशिया तथा लंका में भी पाये जाने लगे।
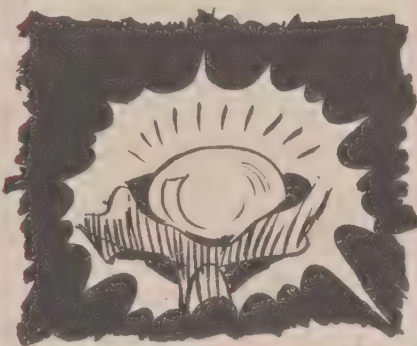
अब तक संसार में पाये जाने वाले मोतियों में सबसे बड़ा मोती दो इंच लम्बा तथा चार इंच घेरे का है। इसका नाम 'होप पर्ल' है तथा इसका वजन १,८०० ग्रेन के बराबर होता है। मोती का एक ग्रेन ५० मि० ग्रेन के बराबर होता है। संसार के अन्य विख्यात मोती हैं, 'सीफिया पर्ल' ५१३ ग्रेन, ला रेगनेट ३४६ ग्रेन तथा ला पेलेग्रीना जिसका वजन ११½ ग्रेन हैं। मोती के कीमती होने की पहचान केवल उसका वजन तथा नाप ही नहीं है। बल्कि मोती की गोलाई उसकी रंगत तथा चमक भी बहुत आवश्यक बातें हैं। कोई-कोई मोती टेढ़े-मेढ़े होते हैं। जौहरी कभी-कभी मोती की सुन्दरता बढ़ाने के लिये उसकी तहें खुरचते जाते हैं जब तक एक सुन्दर चिकनी तह तक नहीं पहुंच जाते। इससे पता चलता है मोती की कई तहें होती हैं। मूलरूप से मोती का विकास उसी वस्तु से होता है जिससे सीप के अन्दर का भाग बनता है। ये सीप द्वारा एक स्राव के रूप में छोड़ी जाती है ताकि उसका कोमल शरीर सुरक्षित रहे।

कलचर्ड तथा असली मोती में केवल यही अन्तर है कि असली में क्षोभक वस्तु स्वयं पहुंच जाती है तथा कलचर्ड में ये वस्तु मनुष्य द्वारा सीप के खोल में पहुंचाई जाती है। तथा सीप इस पर मोती बनाता है।

प्र० : कुछ लोग ऊंचाई से क्यों डरते हैं ?

जलील अहमद—मुरादनगर

उ० : मनुष्य केवल बाह्य पीडा से ही नहीं अपितु आंतरिक पीड़ा से भी पीड़ित होता है। कभी-कभी तो हम इस पीड़ा से रोकर, झेंपकर, शरमा कर अथवा पसीना-पसीना होकर छुटकारा पा लेते हैं। परन्तु कभी-कभी ये मानसिक दबाव हमारी सहन शक्ति से अधिक हो जाता है इस परिस्थिति को टाल कर हम इस भय व चिन्ता से अपने को बचाते हैं।

उदाहरण के लिये कुछ लोग ऊंचाई से डरते हैं। इसका एक परिस्थिति से सम्बन्ध हो सकता है। जैसे एक बच्चा एक सामान्य परिवार में पलता है, वो सबसे प्रेम करता है परन्तु हो सकता है किसी से डरता भी हो। जैसे वो अपने पिता से बहुत डरता है, वो अपने पिता से प्रेम करता है तथा उनसे डरना उसे अच्छा नहीं लगता और बिना जाने ही वो इस डर को छुपाता है तथा इस डर को ऊंचाई से सांकेतिक करता है, तथा ऊंचाई से डरने लगता है। ये आवश्यक है कि ऐसे मानसिक भय से पीड़ित व्यक्तियों के प्रति हम सहानुभूति दिखायें तथा उन्हें समझ कर डाक्टरी सहायता द्वारा इनका इस प्रकार के भय से छुटकारा दिलवायें।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पृष्ठ १० से आगे
आया। मैं उसे जानता था। उसने एक साहित्यिक पत्रिका में एक लेख लिखा था। 'फिक्र तौंसवी के व्यंग की मौत उसी दिन हो गई थी जिस दिन उसने व्यंग लेख लिखने शुरू किए थे।' और मैंने यह वाक्य पढ़ कर कहा था। 'अगर यह वाक्य आकर्षक न होता तो मैं इस ईर्ष्यालु व्यक्ति के मुंह पर तमांचा लगा देता।' अब सैक्रेटरी ने रुंधे हुए गले से कहना शुरू किया। 'दोस्तो ! बड़े दुःख की बात है कि आज हमारा श्रेष्ठ व लोकप्रिय व्यंगकार फिक्र तौंसवी हमारी महफिल में मौजूद नहीं है। वह हमारे व्यंग साहित्य को सूना करके चला गया।'

शोकाकुल व्यक्तियों ने भाव भीनी श्रद्धा से तालियां बजाईं, एक ताली मैंने भी बजाई और व्यंग साहित्य को सूना करने के गम में शामिल हुआ।

अगली सीटों पर दो साहब बैठे खुसर-फुसर करने लगे। एक न कहा, 'हरामजादा ! बकवास कर रहा है। फिक्र तौंसवी से तो अत्यन्त घृणा करता था।'

दूसरा बोला, 'और मैंने सुना है कि उसने स्वर्गीय की विधवा की सहायता के लिए पांच हजार रुपये चन्दा इकट्ठा किया है जिसमें आधा हड़प कर गया है।'

'ही''ही''ही ! क्यों न करता ? खुद भी तो विधवा है।'

उसके बाद सभा के अध्यक्ष ने स्वर्गीय फिक्र तौंसवी की मानवाकर प्रतिमा को एक फूलमाला पहनाई। फूलमाला की सुगन्ध और मुलायमत मुझे अपने बदन में महसूस होने लगी। कभी-कभी ट्रेजिडी भी कितनी मुलायम और सुवासित होती है। मैं जैसे मस्ती में लहरा सा गया। अध्यक्ष महोदय ने फूलमाला पहनाते समय दर्द भरे स्वरों में एक शेर पढ़ा—

'सब कहां, कुछ लाला ओ गुल में नुमायां
' - हो गई
खाक में क्या सूरतें होंगी कि पिन्हां हो
गईं।'

श्रोताओं में से एक यंग टर्क किस्म का लेखक अनायास पुकार उठा : 'हाय जालिम ने कितना सही शेर कितने गलत मौके पर पढ़ा है।

मेरे एक अत्यन्त प्रशंसक मित्र ने उसे गर्दन से पकड़ा और घसीट-घसीट कर बाहर जाकर फेंक आया।

उसके बाद सभा के अध्यक्ष ने शोक मग्न महानुभावों को भाषण करने की अनुमति दी और—हर एक ने सिद्ध कर दिया कि केवल वही फिक्र तौंसवी को करीब से जानता था। एक डाक्टर साहब ने कहा कि स्वर्गीय को जब भी खांसी होती थी मुझसे ही गोलियां ले जाता था और ये गोलियां साहित्यिक सेवाओं के सिलसिले में दी जाती थीं। एक जर्नलिस्ट मित्र ने दावा किया कि एक बार स्वर्गीय के साथ शिमले तक का सफर किया था तो उसने उन्हें रास्ते में अलूचे खिलाये थे। एक पब्लिशर ने तीन वाक्यों में तीन बार ठंडी सांस भरते हुए तीन बार इस बात का उल्लेख किया 'स्वर्गीय अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले मुझ से एक सौ रुपये उधार ले गए थे और उनसे अपनी कमीज पतलून सिलवाई थी। मैं चाहता हूं कि जब स्वर्गीय का मैमोरियल हॉल बनाया जाए तो उस पतलून कमीज को मेरी खास यादगार के तौर पर उसमें अवश्य रख दिया जाए।'

मेरा जी चाहा कि उठकर उस पब्लिशर का परदा चाक कर दूं। लेकिन फिर यह सोच कर खामोश बैठा रहा कि स्वर्गीय लोगों का विश्वास कौन करता है ?

एक और साहब उठे। वो बहुत ही घटिया शायद और बहुत ही अमीर आदमी थे। वो बड़े तैश में थे। मेज पर मुक्का मारते हुए गरज कर बोले। 'मैं''मैं''मैं साहित्य अकादमी से पूछता हूं कि स्वर्गीय को साहित्यिक एवार्ड का पात्र क्यों नहीं समझा गया था ? और अगर जीवन में नहीं समझा गया तो कम से कम मृत्यु के बाद ही उन्हें एवार्ड दे दिया जाए।'

इस पर 'शेम-शेम' के नारे लगाए गए। न जाने फिक्र तौंसवी को शेम-शेम कहा गया या साहित्य अकादमी को ? खैर, क्रोध और जोश की मिश्रित तालि की गूंज में इस सुझाव का समर्थन कर दिया गया।

शोक सभा की समाप्ति से कुछ मिनट पूर्व अध्यक्ष महोदय उठ कर चले गए क्योंकि उन्हें एक दूतावास की काकटेल पार्टी में जाना था मगर जाते-जाते वह मातमी फंड में एक सौ एक रुपया चन्दा देने की घोषणा कर गये और शेष महानुभावों ने मानवता के बोझ तले दब कर जिस तरह चन्दा दिया उसके लिए पूरे एक एक्ट के ड्रामे की जरूरत है।

एक एक्ट के इस ड्रामे में क्लाईमैक्स उस समय पैदा हुआ जब काली साड़ी पहने मेरी विधवा पत्नी को माइक्रोफोन पर आंसू बहाने के लिए लाया गया। उसने सुहाग की आखिरी चूड़ी स्टेज पर तोड़ी, माथे का सिन्दूर और बिन्दी मिटाई, आंखों का काजल पोंछा और फिर उसमें आंसू भर लाई। इस मातमी हालत में मेरी पत्नी मुझे अत्यन्त आकर्षक और मनमोहक लगी। विधवाओं के व्यक्तित्व में भी एक अजीब सा भीगा-भीगा आकर्षक होता है। मैंने मन ही मन कहा। ऐ जालिम ! तू मेरे जीते जी विधवा क्यों नहीं बनी थी ?'

उसकी निरन्तर सुबकियों से महफिल की सभी आंखें सजल हो गईं। मेरी आंखों में भी आंसू आ गए। मगर ये गम के नहीं खुशी के आंसू थे कि कम से कम मेरी मृत्यु के बाद तो मुझे पत्नी का प्रेम मिला वरना इससे पहले जब भी उसकी आंखों में आंसू आये, अपनी माँ की याद में ही आते थे।

और फिर मेरी पत्नी के मौन शोका-कुलता से महफिल में ऐसी स्तब्धता व्याप्त हुई कि किसी के मुंह से कोई शब्द तक नहीं निकलता था। न आह का न वाह का। अतः महफिल की दुर्दशा देख कर सैक्रेटरी ने सभा की समाप्ति की घोषणा कर दी। और 'फिक्र तौंसवी स्मारक समिति' के पांच प्रतिष्ठित सदस्य मेरी पत्नी का दिल बहलाने के लिए पास के रैस्टोरां में चले गए। यह रैस्टोरां कॉफी और आमलेट के लिए बहुत मशहूर था। काश ! मैं उनसे इतना कह सकता। हजरत, मेरे नाम के चन्दे में से एक कॉफी और आमलेट इस बदनसीब को भी मिल जाये।'

हॉल मातम करने वालों से खाली हो गया। मैं अन्तिम व्यक्ति था जो अपनी सीट पर बैठा रहा, बैठा रहा। न जाने कितने साल बैठा रहा, न जाने कितनी सदियों कि अचानक किसी ने मेरा कंधा झिंझोड़ा और एक कर्कश सी आवाज आई : 'साहब उठिये मीटिंग खत्म हो गई।'

और मेरी सदियों की नींद खुल गई, मेरे सामने कम्युनिटी हॉल का चपरासी खड़ा था। मैंने हड़बड़ा कर पूछा : 'मैं कहां हूं ?'

चपरासी हंस दिया—'फिक्र साहब ! आप कम्युनिटी हॉल में हैं। आप देश के मशहूर शायर जनाब घायल नामुरादाबादी की शोक सभा में भाग लेने के लिये आए हुए थे। सभा कब की समाप्त हो गई। आप घर नहीं जायेंगे क्या ?'

यह सूक्ष्मदर्शी यंत्र लेकर क्या ढूढ़ रहा है पृथ्वी चन्द ?
जयचन्द यार, मैं फ्लून वीटल को खोज रहा हूं. छोटा-सा कीड़ा है। लेकिन बड़ा ही असाधारण। तुझे पता है फ्लून वीटल के वारे में ?
फ्लून वीटल रेगिस्तान में पाया जाता है। इसकी असाधारणता का यह आलम है कि एक समय में केवल एक फ्लून वीटल एक रेगिस्तान में मिलेगा। वह पूरे १३०० साल रेत में दवा रहता है। १३०० वर्ष के वाद ऊपर आता भी है तो केवल एक अंडा देने के लिये।
पिछले फ्लून बीटल के निकलने के बाद पता है हमारी पूरी छः-सात सौ पीढ़ियां निकल चुकी हैं ? यह वात मेरे वाप, दादा, पर दादा, पर-पर-पर-पर-दादा से जुवानी चली आ रही है। मेरे समय में अव फ्लून वीटल को अंडा देने के लिये निकल आना चाहिये। मैं यही देख रहा हूं कि वह निकला तो नहीं।
वाकई वड़ा असाधारण जीव है भई। तेरह सौ साल रेत में दवा रहता है। एक बार निकलता है तो अंडा देने के लिये। यार यह भी कोई लाइफ है ?
यही पूछने के लिये तो मैं उसकी तलाश कर रहा हूं जयचंद। तेरह सौ साल के बाद मुझे यह सुनहरा मौका मिलने वाला है।
पंचतंत्र
वह रहा फ्लून बीटल ! धन्य भाग हमारे !!
अव पूछते हैं इससे कि तुम्हारी ऐसी विचित्र लाइफ में फायदा क्या है ?
फायदा बहुत है भाई ! हमारे बच्चे को हिस्ट्री का रट्टा नहीं लगाना पड़ता। पांच हजार साल के तुम्हारे इतिहास को याद करने के लिए कितना घोटा मारना पड़ता है। इस बीच हमारी कुल चार पीढ़ियां हुई हैं। सबकी उल्लेखनीय घटना एक ही है, १३०० साल रेत में दवे सोये रहे फिर ऊपर आकर अंडा दिया और किस्सा खत्म। आधे पेज में पूरी हिस्ट्री, जिसे याद करने में कुल १० सैकिण्ड लगते हैं।
रामायण महाभारत
इगलंड का इतिहास
ईस्ट इंडिया कम्पनी
Glimpses of
मुगल काल
गुप्त काल
गुप्त काल
स्वतंत्रता
आजादी बाद
अकबर
१८५७ का गदर

फिलम अभिनेत्री

ऊई दय्या के जवाब

फिल्मी एक्ट्रेसों से वैसे तो कई इन्टरव्यू लिए जाते हैं वही पुरानी घिसीपिटी लाइनों पर। दीवाना को यह विचार आया कि किसी अभिनेत्री से देश व विश्व की गूढ़ समस्याओं पर उनके विचार जाने जायें तो कैसा रहेगा ? यही सोचकर हमने अपने पत्रकार कुलदीप अय्यर को प्रसिद्ध अभिनेत्री ऊई दय्या के पास भेजा। कुलदीप के प्रश्न व ऊई दय्या के जवाब आप भी पढ़िये। आनन्द आयेगा साथ ही पता लगेगा कि फिल्म वालों का जनरल नॉलिज कितना विस्तृत होता है।

प्र० : १०+२+३ शिक्षा पद्धति के बारे में आपका क्या ख्याल है ? क्या यह अच्छा रहेगा ?

उ० : ९+२=११ होता तो ठीक रहता क्योंकि नौ दो ग्यारह नाम की पहले भी पिक्चर आ चुकी है। आपको पता है कि स्टूडेन्टस पिक्चरों को कितना लाइक करते हैं, वह एजुकेशन में भी ठीक रहता।

प्र० : रूस और अमरीका में जनीवा स्विटजरलेंड में परमाणु अस्त्रों के विस्तार पर रोक लगाने के लिए जो वार्ता चल रही है वह सफल होगी ?

उ० : जरूर सक्सेसफुल रहेगी। स्विटजरलेंड इज ए ब्यूटीफुल कंट्री—वहां जो भी फिल्म पिक्चराइज होती है वह जरूर हिट होती है। वहां के सीन बहुत अच्छे हैं। बहुत से लोग तो सिर्फ वह सीन देखने के लिए ही फिल्म देखते हैं।

प्र० : आंध्र के साइकलोन पीड़ितों की सहायता किस प्रकार की जानी चाहिए ?

उ० : वहां सारी फिल्मों पर एन्टरटेनमैंट टैक्स माफ कर देना चाहिए। टिकट के पैसों का सिक्सटी परसेंट गवर्नमेंट ले जाती है। वहां के लोगों को इतनी कंसेशन तो मिलनी ही चाहिये। पहले ही वे गरीब थे। साइक्लोन से बहुत डैमेज हुआ होगा।

प्र० : क्या इन्दिरा जी दोबारा सत्ता में आ सकेंगी ?

उ० : वह तो डिपेंड करता है कि अगले इलैक्शन में उनको कांट्रेक्ट मिलता है या नहीं—वैसे मुझे उनकी एक्टिंग बहुत अच्छी लगती है। मैंने कई डाक्यूमैंट्री फिल्में भी देखी हैं। अगर वह अपनी स्पीच सलीम जावेद से लिखवायें तो मेरे ख्याल में ज्यादा अच्छा रहेगा।

प्र० : जनता सरकार सचमुच ही चार साल में देश में सम्पूर्ण नशाबन्दी लागू कर सकेगी ?

उ० : मुझे तो नशाबन्दी अच्छी नहीं लगती। इससे बिजनेस ठप्प हो जायेगा। स्कॉच व्हिस्की इतनी बुरी चीज नहीं है। सबको पीनी चाहिए। मुझे पता लगा कि लोग घटिया शराब पीकर मरते हैं, यह बुरी बात है। उनको स्कॉच पीने के लिए कहना चाहिए। राशन की दुकानों पर स्कॉच मिलनी चाहिये ताकि गरीब लोग भी पी सकें—कुल पचास रुपये की ही तो बात है।

प्र० : सरकार ने जो विभिन्न आयोग बैठा रखे हैं उनसे क्या उद्देश्य सिद्ध होगा ?

उ० : सरकार ने आयोग बैठा रखे हैं ? यह अच्छा नहीं है। मुझे पता नहीं था किसी को बैठाने से नुकसान ही होता है। सरकार को चाहिए कि वह आयोगों को खड़ा कर दे ताकि वह काम कर सकें।

प्र० : बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाने का आपके विचार में सबसे अच्छा उपाय क्या है ?

उ० : मेरे ख्याल में जनसंख्या पर रोक नहीं लगनी चाहिए। आदमी कम होंगे तो पिक्चरों के हाउसफुल कैसे होंगे ? हम तो चाहते हैं कि जनसंख्या इतनी हो कि कोई भी फिल्म न पिटे।

प्र० : फरक्खा जल समझौता हमारे लिये लाभकारी है ? क्या इस समझौते के अनुसार बंगला देश को ज्यादा पानी दिया गया ?

उ० : ज्यादा पानी दिया तो क्या हुआ ? बाबा मुझे पानी से डर लगता है। मैं तो जुहू बीच पर भी कभी नहीं गयी।

बचपन में मैं स्वीमिंग पुल में डूबते-डूबते बची थी। पानी में अजगर भी होते हैं जो आदमी को खा जाते हैं।

प्र० : आप किस पार्टी की समर्थक हैं ?

उ० : मुझे तो हर पार्टी में जाना पड़ता है। क्योंकि हमारी इण्डस्ट्री ऐसी है यहां किसी को नाराज नहीं किया जा सकता। कॉकटेल पार्टियों में मेल-मिलाप भी होता है कांट्रेक्ट भी मिलते हैं।

प्र० : देश में आजकल हड़तालें बहुत हो रही हैं। इस असन्तोष की स्थिति से कैसे उभरा जा सकता है ?

उ० : हड़तालों को इमैजीनेशन से रोकना चाहिए आपने नमक हराम पिक्चर देखी होगी उसमें मेरा भी रोल था। एक दो हड़ताल के सीन थे। एक दो और भी पिक्चरें हैं जिनमें हीरो गाना गाकर हड़ताल खत्म करता है। फैक्ट्री के मालिकों को आनन्द बख्शी से गीत लिखवा कर आर० डी० बर्मन द्वारा संगीतवद्ध करवा कर रखना चाहिए। मौका आये तो उससे काम लिया जाये।

प्र० : श्री जयप्रकाश नारायण ने बड़े राज्यों को तोड़कर छोटे-छोटे राज्य बनाने की मांग की है। क्या ऐसा करना लाभदायक रहेगा ?

उ० : कुछ कहना मुश्किल है। अब फिल्मों को ही लीजिये, कभी-कभी बड़े बजट की फिल्म भी पिट जाती है, कभी छोटे बजट की फिल्म हिट हो जाती है जैसे जय संतोषी मां। और उधर बड़े बजट की मेरा नाम जोकर पिट गई थी।

प्र० : आजकल आपने सुना ही होगा कि ट्रेनों के बहुत एक्सीडेंट हो रहे हैं इससे पब्लिक में असुरक्षा की भावना पैदा हो रही है। इसका असर क्या होगा ?

उ० : मुझे खुशी है कि ऐसा हो रहा है। आपने अपनी फिल्मों में देखा होगा कि ट्रेन एक्सीडेंट स्टोरी को ट्विस्ट देने के लिए कितने काम आते हैं। एक्सीडेंट में भाई बहन, भाई-भाई, मां-बाप वगैरह बिछुड़ जाते हैं जो अन्तिम रील में ही इकट्ठे होते हैं। एक्सीडेंट में याददाश्त जाने पर भी कहानी में मोड़ आ जाता है। लोग यही कहते रहते थे कि हिन्दी फिल्मों में सब नकली होता है रियल्टी कुछ भी नहीं होती। अब ऐसा नहीं होगा लोगों का हमारे स्टोरी राइटरों पर विश्वास जगेगा।

प्र० : क्या कांग्रेस और जनता पार्टी टूटेंगी ?

उ० : टूटना ही चाहिये। यह स्टार सिस्टम बहुत खराब है। इनके टूटने पर छोटी-छोटी कई पार्टियां बन जायेंगी और नये-नये स्टारों को आगे आने का मौका मिलेगा।

प्र० : हिन्द महासागर में बड़ी शक्तियां अपने-अपने अड्डे बना रही हैं इससे भारत पर क्या असर पड़ेगा ?

उ० : मेरे ख्याल में यह अफवाह ही है। क्योंकि हिन्द महासागर में अड्डे बन रहे होते तो कल को कॉकटेल पार्टी में मुझे प्राण, चोपड़ा, अमजद खां, डैनी और रंजीत कैसे मिलते ? कोई भी पावर ओशन में अड्डे बनायेगा तो इनमें से किसी न किसी को जरूर बुलाता।

प्र० : भारतीय हॉकी को कैसे उभारा जा सकता है ?

उ० : आई० एस० जौहर की देख रेख में फिल्म स्टारों और हॉकी खिलाड़ियों के बीच अधिक मैच आयोजित किये जाने चाहियें। इससे उनको प्रोत्साहन मिलेगा। और प्रैक्टिस भी हो जायेगी।

प्र० : विद्यार्थियों में आजकल अनुशासनहीनता बढ़ रही है। इसका क्या इलाज है ?

उ० : अनुशासनहीनता बढ़ रही है ? यह झूठ होगा। लोग बाग मुझ पर भी अनुशासनहीन होने का आरोप लगाते हैं कि सैट से एकदम गायब हो जाती है, डेट देकर सैट पर नहीं आती वगैरह। अब आप बतायें कि मैं कोई मशीन हूं ? तीन-तीन शिफ्ट काम करती हूं। थक कर चूर हो जाती हूं तो आराम करना पड़ता है। लोग इसे अनुशासनहीनता समझते हैं। छात्रों को भी एक ही दिन में कई शिफ्टों में कई सब्जेक्ट पढ़ने पड़ते हैं। उनका भी यही हाल होगा।
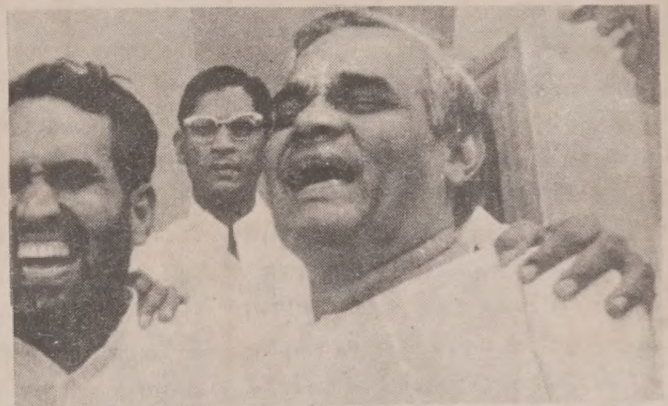
प्र० : जनता सरकार आने के बाद भारत की विदेश नीति में कोई परिवर्तन आया है ?

उ० : हां, पहले हमको पासपोर्ट वीसा लेने में बड़ी दिक्कत होती थी अब नहीं होती जब चाहें लन्दन या पेरिस छुट्टियां मनाने या शूटिंग करने जाया जा सकता है।

प्र० : अब अन्तिम प्रश्न देश के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए दीवाना के पाठक क्या कर सकते हैं ?

उ० : नीम की दातुन कर सकते हैं उससे दांत मजबूत और उजले बने रहेंगे। हंसकर समय काटने में ही देश का भविष्य उज्जवल है। तभी तो मैं कभी सीरियस रोल नहीं करती।

पैकर सर्कस

क्लीन बोल्ड बेदी द्वारा

भारत व आस्ट्रेलिया के बीच हुए ब्रिसवेन के प्रथम टैस्ट में जो सबसे महत्वपूर्ण बात हुई वह परम्परागत टैस्ट क्रिकेट की पैंकर सर्कस पर विजय थी । जैसे कि अब तक सभी पाठकों को पता लग गया होगा कि किस प्रकार आस्ट्रेलिया के टी. वी. कुबेर कैरी पैंकर ने विश्व के सबसे बढ़िया क्रिकेट स्टार (इनमें भारत का कोई खिलाड़ी नहीं है ।) अपने वर्ल्ड सीरीज खेलने के लिए अनुबंधित कर लिए। विश्व क्रिकेट संघ को यह खतरा हो गया कि इससे टैस्ट क्रिकेटों का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा । जवाबी कार्यवाही में सभी देशों के क्रिकेट संघों ने उन सब खिलाड़ियों का बहिष्कार करने का निर्णय किया जिन्होंने पैंकर से अनुबंध किया था । खिलाड़ियों ने इंग्लैंड के कोर्ट में इस निर्णय के विरुद्ध याचिका दायर की । अदालत ने खिलाड़ियों के हक में फैसला दे दिया । अब उन्हें काऊंट्री क्रिकेटों में खेलने से रोका नहीं जा सकेगा । पैंकर की निश्चय ही यहां विजय हुयी । लेकिन सबसे बड़ा प्रश्न दर्शकों का था । यदि दर्शक समर्थन न दें तो सारा गुड़ गोबर । पैसा तो क्रिकेट-प्रेमी जनता की जेब से आना था ।

दिसम्बर से भारत आस्ट्रेलिया टैस्ट मैच होते थे । पैंकर को पूरा भरोसा था कि टैस्ट मैचों की वह कमर तोड़ देगा दर्शकों को अपने पैंकर सीरीज की ओर आकर्षित करके । उसने अपने टैस्ट जिन्हें वर्ल्ड सीरीज का नाम दे रखा है कि तिथियां लगभग वही रखीं जो भारत आस्ट्रेलिया टैस्टों की थीं । कहना यह है कि जब पैंकर मैचों में विश्व भर के जगमगाते क्रिकेट सितारे खेलेंगे तो भारत के पिद्दी क्रिकेटरों और आस्ट्रेलिया के बचे-खुचे तथा नए क्रिकेटरों की टीम के टैस्टों को कौन देखना चाहेगा ? लोग ब्रिस्बेन टैस्ट देखने जाने की बजाय घर बैठे टी० वी० पर पैंकर सीरीज के सितारे बैरी रिचर्डस, लिलि, ग्रेग, लायड, विवियन, रिचर्डस, होल्डिग, राबर्टस, नॉट, चैपल बन्धु का खेल बियर की चुस्कियां लेते हुए देखना चाहेंगे ।

दूसरी ओर कुछ का यह मत था कि क्रिकेट मैच में जब राष्ट्रीय स्पर्धा की आवाज की भावना नहीं होगी तो जोश व रंग नहीं आएगा । समाचार पत्र पैंकर विरोधी थे । उन्होंने भी भारतीय टीम का प्रचार करना शुरू कर दिया । आवश्यकता से अधिक गुणगान कर दिए गए । कुछ ने लिखा कि यह टीम विश्व युद्ध के बाद आस्ट्रेलिया की धरती पर सबसे आकर्षक धड़ल्लेबाज बल्लेबाजी करने वाली टीम है। विश्वनाथ दुनिया को दिखाएगा कि थामसन से बम्पर पर कैसे सिक्सर लगाया जा सकता है आदि । यह सब बातें लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए थी । इस सबमें रंग भर दिया इस तथ्य ने कि टैस्ट से पहले के आठों मैच भारतीय टीम जीत गयी । इससे भी लोगों की उत्सुकता जगी होगी ।

दूसरी ओर पैंकर ने भी खूब प्र[illegible] किया—बहुरंगे प्रचार ब्रोशूर बांटे ग[illegible] क्रिकेट प्रेमी जनता सांस रोक कर परि[illegible] देखने की प्रतिक्षा करने लगी । टैस्ट मैच[illegible] भारत आस्ट्रेलिया टैस्ट को देखने ६ ह[illegible] दर्शक आए । उसी दिन हो रहे पैंकर सी[illegible] के विश्व भर के जगमगाते सितारों के [illegible] को देखने कुल एक जगह अढ़ाई हजार [illegible] दूसरी जगह मात्र ७०० व्यक्ति आ[illegible] ब्रिस्वेन टैस्ट में भारतीय टीम के आ[illegible] बल्लेबाजों ने जिस प्रकार अन्तिम दिन [illegible] को रोमांचक क्षणों में पहुंचा दिया उससे [illegible] पैंकर की कमर ही टूट गयी । साबित [illegible] गया कि परम्परागत टैस्टों में जो स्पर्धा [illegible] रोमांच होता है वह किराए के क्रिकेटर [illegible] कर सकते । पैंकर का एक मैच तो बेल[illegible] में हुआ जहां मामूली खेलों के भी आठ [illegible] हजार टिकिट मजे में बिक जाते हैं । [illegible] यह है कि क्रिकेट प्रेमी जनता ने पैंक[illegible] अस्वीकार कर दिया है और परम्परागत[illegible] की विजय हुयी है ।

कुछ भी हो पैंकर ने खिलाड़िय[illegible] फायदा तो करवाया । पैंकर के कारण [illegible] अधिकारी खिलाडियों को अधिक पैस[illegible] पर मजबूर हो गये हैं । वर्तमान भा[illegible] क्रिकेट दल के प्रत्येक सदस्य को इस द[illegible] लगभग पचास हजार रुपए से अधि[illegible] मिलेंगे । दिल ही दिल में हर क्रिकेटर [illegible] का आभारी होगा ।

मदहोश
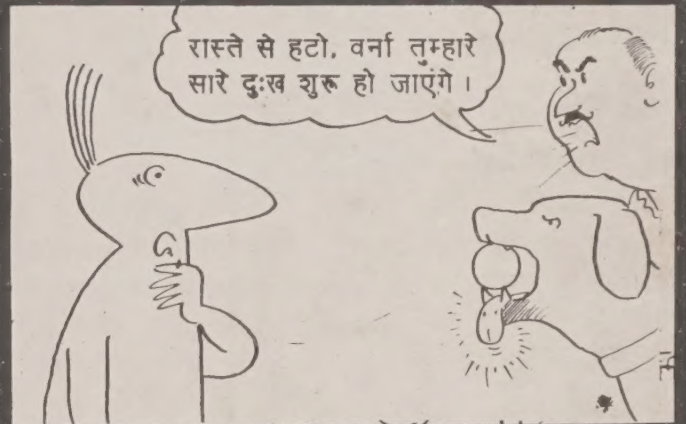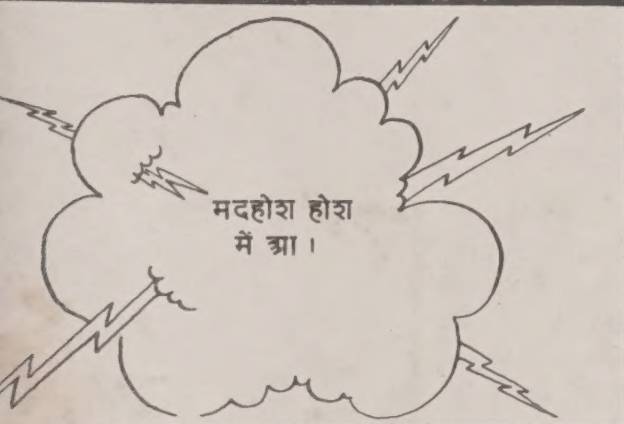
इंस्पेक्टर : 'क्यों जी, हेडलाइट क्यों जलायी ?'

सुरेश जी : 'इंस्पेक्टर साहब, हुआ यों कल ही मेरी कार एक पेड़ से टकरा गई दोनों हेडलाइट टूट गयीं।'

इन्स्पेक्टर : 'अपना लाइसेंस दिखाओ।'

सुरेशजी : 'वह तो अभी बनवाया ही ।'

इन्स्पेक्टर : 'ठीक है, तो दो जुर्म करने कारण मुझे आपका चालान करना ।'

सुरेशजी की पत्नी: 'ठहरिए इन्स्पेक्टर; इनकी बातों पर बिल्कुल ध्यान मत । जब ये ज्यादा पी लेते हैं तो ऐसी तें करते हैं।'

●

प्राइमरी कक्षा की अध्यापिका ने बच्चों —'मैं चाहती हूं, बच्चो, कि तुम सब चुप रहो। कक्षा में इतनी शांति होनी चाहिये कि सुई गिरने की आवाज तक सुनाई दे।' बच्चे चुप हो गये। कुछ सैकिण्ड की चुप्पी के बीच एक बच्चा जोर से चिल्लाया—'दीदी, अब तो सुई गिराइये।'

●

जब सुरेशजी को महेशजी के घर ठहरे एक महीना हो गया तो घरवाले काफी परेशान हो गये। एक दिन महेशजी का छोटा पुत्र परेश सुरेश जी से बोला, 'अंकल, अब आप दिल्ली नहीं आयेंगे क्या ?' सुरेश बोले, 'क्यों नहीं बेटा, जरूर आयेंगे; बल्कि साल में तीन-चार बार आयेंगे।' परेश ने पूछा, 'अंकल, लेकिन आप यहाँ से जायेंगे नहीं तो आएंगे कैसे ?'

●

मां जब महात्मा गांधी का जीवन-चरित्र पढ़कर सुना चुकी तो परेश ने पूछा, 'माँ, गांधीजी जब इतने ईमानदार थे तो उनके जन्मदिन पर सारे बैंक बन्द क्यों कर दिये जाते हैं ?'

●

पत्नी—जब कोई विवाहित पुरूष किसी सुन्दर स्त्री को देखता है उस समय वह भूल जाता है कि वह विवाहित है।

पति—यह बात बिलकुल गलत है। सच पूछो तो उसे उसी समय यह स्मरण होता है कि वह विवाहित है।

●

मोहनसिंह की पत्नी एक बार किसी विशेष काम से अपने पति के पास उसके दफ्तर गई। दफ्तर का क्लर्क उसे नहीं जनता था। जब उसने मोहनसिंह के बारे में पूछा तो क्लर्क ने कहा, "क्षमा कीजिए श्रीमती जी, वे अभी अपनी पत्नी के साथ भोजन करने गये हैं।'

पत्नी—"ठीक है ! जब वे लौटें तो उन से कह दीजिए कि उनकी स्टेनोग्राफर उन्हें पूछने आई थी।"

●

'किस चिन्ता में पड़े हो मेरे मित्र ?'

'पत्नी ने आठ दिन तक मुझसे न बोलने की कसम खाली है।'

'तो यह मातम की बात है ?'

'यह नहीं, मातम की बात तो यह है की उस कसम का आज आठवां दिन है।'

सत्य पर विचित्र

अखबारों में प्रायः अजीब-अजीब खबरें पढ़ने को मिलती हैं जो सत्य होती हैं। आप अखबार की कतरन काट कर हमें भेजें। जिस पाठक की कतरन दीवाना में छपेगी उसे दो रुपये पुरस्कार स्वरूप दिये जायेंगे। अखबार की कतरन के नीचे उस अखबार का नाम और उस दिन की (जिस दिन छपी है) तारीख अवश्य लिखें।

'हम जेब कतरे हैं'

बुलन्दशहर, ५ दिसम्बर (स.)। जेबकतरे एवं महिलाओं के गले से जंजीर खींच कर भाग जाने वाले चार हिप्पीनुमा लड़के पिछले दिनों खुर्जा में पकड़े गए। पुलिस ने उन्हें सारे शहर में घुमाया।

जैसे ही कोई चौराहा आता ये लड़के एक-दूसरे के सिर में जूते मार-मार कर कहते 'हम जेबकतरे हैं', हम महिलाओं के गले से जंजीर खींचते हैं। बाद में पुलिस ने सभी लड़कों के सिर मुंडवा दिए।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों से खुर्जा में जेबकतरे और जंजीर खींचने की घटनाओं में भारी वृद्धि हो गई थी। (हिन्दुस्तान)

सिपाही लड़की को ले भागा

कानपुर, (ह. सं.)। नगर में उस समय सनसनी फैल गई जब खपरा मोहाल निवासी श्री श्याम बिहारी ने फेथफुल गंज चौकी के सिपाही सतीश के विरुद्ध एक रिपोर्ट लिखाई कि उक्त सिपाही १७ वर्षीय पुत्री कुमारी शीला सोनकर को भगा ले गया है।

घटना के सम्बन्ध में बताया जाता है कि उक्त छात्रा का अपहरण २७ नवम्बर को कर लिया गया था तथा सिपाही सतीश उसी दिन से छुट्टी पर है।

हिन्दुस्तान ७ दिसम्बर

राम ने लक्ष्मण को चाकू मारा

लखनऊ, २५ अक्तूबर। चिनहट थाने के अन्तर्गत कल रात यहां रामलीला में अभिनय करने वाले राम ने लक्ष्मण को चाकू मार दिया। राम से लक्ष्मण की पुरानी रंजिश थी। लक्ष्मण बलरामपुर अस्पताल में भर्ती है। राम अभी तक गिरफ्तार नहीं हो पाया है।

होठ का हर्जाना

लंदन, २६ अक्तूबर (एएफपी), मोटर दुर्घटना में निचला होठ सुन्न हो जाने के कारण एक ब्रिटिश महिला को ६,८३५ पौंड हरजाने के तौर पर दिये गये। क्योंकि वह चुम्बन का आनन्द नहीं उठा सकती।

जज ने फैसला देते हुए कहा कि प्लास्टिक सर्जरी से ३३ वर्षीया श्रीमती वर्जीनिया स्पीगल के होंठ के निशान तो मिट गये। लेकिन उसे चुम्बन लेने या देने में आनन्द नहीं आता।

श्रीमती स्पीगल की नौ वर्षीया पुत्री को भी हरजाने के तौर पर १२०० पौंड दिये गये। जज ने कहा कि उसी दुर्घटना से लड़की के पेट पर एक निशान पड़ गया है। जिससे वह बिकनी नहीं पहन पायेगी।

हिजड़ों की मदद से अपहृत युवती बरामद

कानपुर, १३ अक्तूबर। लखनऊ के हसनगंज मोहल्ले से पिछले सात माह पूर्व अपहृत की गई युवती को कल रात (हिजड़ों) की सहायता से खोज निकाला गया।

बताया जाता है कि युवती को उसी के एक रिश्तेदार की सहायता से अपहृत कर कानपुर लाया गया था। १७ वर्षीय इस युवती के अपहरण के बारे में उसके पिता सहित किसी को भी जानकारी नहीं थी। युवती के पिता ने जानकारी मिलने पर कानपुर जाकर आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य से सहायता मांगी। श्री आर्य ने जूही क्षेत्र में युवती का पता लगाने के लिये हिजड़ों की सहायता ली।

हिजड़ों ने घरों में जाकर अपनी ढोलक बजाना शुरू कर दिया और लोगों से अभी हाल ही किसका विवाह हुआ, इसके बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्हें जब पता चला कि हरी कालोनी के एक निवासी की अभी हाल ही में शादी हुई है, तो वे उसके पिता के पास पहुंच गये। पुलिस के अनुसार हिजड़ों ने युवती के कथित अपहरणकर्त्ता के पिता के मकान पर जाकर ढोलक बजाकर नाच गाना प्रारम्भ कर दिया। ढोलक की आवाज पर पुलिस तथा श्री आर्य उक्त मकान पर पहुंच गये और युवती को बन्द गुसलखाने से बरामद कर लिया। पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

३०० मीटर का फासला २३ वर्ष में

शिमला, १३ दिसम्बर (ह० स०)। विश्वास करें या न करें लेकिन यह सच है कि एक पत्र को ३०० मीटर का फासला तय करने में २३ वर्ष लग गए जबकि इस पत्र ने हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के गांव से १६२ कि० मी० का अन्तर एक दिन में तय किया।

इस गांव से २६ मार्च १९५५ को डाला गया यह पत्र यद्यपि अगले दिन शिमला पहुंच गया लेकिन माल रोड स्थित मुख्य डाकघर से ३०० मीटर की दूरी पर स्थित एक दुकानदार के पते पर भेजे गए इस पत्र को पहुंचने में २३ वर्ष लगे। यह पत्र आज उक्त व्यक्ति को डाकिए ने दिया।

२३ वर्ष तक यह पत्र मुख्य डाकघर में किस कोने में रहा यह डाक अधिकारी ही बता सकते हैं। यह पत्र हिमाचल विधानसभा के भूतपूर्व सदस्य पंडित हरीराम को उनके पिता ने लिखा था। पंडित हरीराम को डाकिए को ५० पैसे भी देने पड़े क्योंकि व डाक लिफाफे का मूल्य २ आने था।

मुसलमानों द्वारा श्रीराम की शोभा यात्रा का स्वागत

टोंक, २४ अक्तूबर (स० हि०)। हिन्दू-मुस्लिम एकता का कल रात यहां एक अपूर्व दृश्य देखने को मिला जब मुस्लिम-मतावलम्बियों ने भगवान श्रीराम की शोभा यात्रा का स्वागत किया। भरत मिलाप कार्यक्रम में जब श्रीराम की शोभा यात्रा का जुलूस मस्जिद के पास बाजार में पहुंचा, तो मुस्लिम लोगों ने पुष्पमालायें भेंट कीं।

सत्य पर विचित्र
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२